

कृषक



दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

● भोपाल मंगलवार 04 से 10 नवंबर 2025 ● वर्ष-26 ● अंक-24 ● पृष्ठ-20 ● मूल्य-20 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

इफको का है वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा

फसलों की भरपूर पैदावार के लिए इफको के उत्पादों की उत्कृष्ट श्रृंखला

आत्मनिर्भर भारत आत्मनिर्भर कृषि

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड राज्य कार्यालय- ब्लॉक 2, तृतीय ताल, पर्यावास भवन अरोरा हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

अधिक जानकारी हेतु: www.nanoureia.in - www.nanodap.in एम.पी. 188 1887 /ifco.coop /ifco PR /ifco

300 दिन की सुरक्षा के साथ 225/- की लागत पर 10000/- (एकड़ पर 2 लाख) का उत्पादन बढ़ाएं

300 दिन की सुरक्षा के साथ 225/- की लागत पर 10000/- (एकड़ पर 2 लाख) का उत्पादन बढ़ाएं

रबी विशेषांक 2025

रबी विशेषांक में पढ़िये

- चने की बुवाई बीजोपचार पश्चात करें 6
- चना उत्पादन की उन्नत कृषि विधियां 7
- चना मसूर आधारित कृषि प्रणाली का महत्व 8
- अधिक लाभ देती दलहनी फसल मसूर की खेती 9
- मटर की उन्नत खेती 10
- उन्नत तरीके से करें गेहूं की खेती 11
- अलसी की खेती फायदा भरपूर देती 12
- उन्नत तरीके से करें लहसुन की खेती 13

सुनहरे रबी की पहली किरण
Ziron Power+ वाले खेतों के संग

इस रबी, अपने आलू, सरसों, गेहूं, प्याज, लहसुन और चने की फसलों को दें Ziron Power+ की शक्ति!

एक ही उर्वरक, रबी के फसलों की करें पूरी हर ज़रूरत!

ZIRON POWER+

एक ही उर्वरक, रबी के फसलों की करें पूरी हर ज़रूरत!



1800 188 1887

खेती की जैविक पद्धतियों को अपनाएं: श्री पटेल

राज्यपाल ने कृषि महाविद्यालय सीहोर के कन्या छात्रावास एवं ऐरोपोनिक्स इकाई का किया लोकार्पण



भोपाल। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि किसान को खेती की जैविक पद्धतियों, प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए प्रेरित करें। कृषि की आधुनिक तकनीक और नई शोध पद्धतियों को अपनाकर उत्पादन की क्वालिटी और क्वांटिटी बढ़ाने का प्रयास करें।

उन्होंने कहा कि यह सुखद है कि अब समाज में लोगों का रूझान जैविक उत्पादों की ओर बढ़ रहा है। राज्यपाल श्री पटेल रफी अहमद किदवई कृषि महाविद्यालय सीहोर के कन्या छात्रावास एवं ऐरोपोनिक्स इकाई के लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर प्रदेश के कृषि मंत्री एदल सिंह कंसाना भी मौजूद थे।

श्री पटेल ने कहा कि प्राकृतिक खेती, भूमि एवं पर्यावरण हितैषी कृषि पद्धति है, जो भूमि की ऊर्वरता बनाए रखती है। इसके लिए समय-समय पर वर्मी कंपोस्ट का उपयोग भी किया जाना चाहिए। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से

कहा कि वे किसानों की आय बढ़ाने वाली उन्नत बीजों और नई तकनीकों पर अनुसंधान करें।

कृषि मंत्री श्री कंधाना ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा खेती के विकास और किसानों के कल्याण के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। किसानों की आय में वृद्धि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने का विशेष प्रयास किया जा रहा है। राज्यपाल श्री पटेल ने महाविद्यालय परिसर में कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा उत्पादित विभिन्न फसलों, जैविक उत्पादों एवं नवीन तकनीक के प्रदर्शन पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं किसानों और वैज्ञानिकों से संवाद किया। कार्यक्रम में कुलगुरु अरविन्द कुमार शुक्ला ने कृषि महाविद्यालय तथा राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिक, विद्यार्थी, अधिकारी तथा किसान उपस्थित थे।

भावांतर योजना के लिए हेल्पलाइन कॉल सेंटर प्रारंभ

भोपाल। राज्य शासन द्वारा प्रदेश के किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई भावांतर योजना-2025 के अंतर्गत सोयाबीन की खरीदी में मदद के लिये भावांतर हेल्पलाइन सुविधा प्रारंभ की गई है। हेल्पलाइन का दूरभाष नंबर- 0755-2704555 है।

योजना के प्रभावी एवं सुचारू क्रियान्वयन के लिए किसान, व्यापारी संगठनों, मंडी बोर्ड/मंडी समितियों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सुविधा के लिए भावांतर हेल्पलाइन कॉल सेंटर प्रारंभ किया गया है। यह हेल्पलाइन 30 अक्टूबर 2025 से निरंतर योजना अवधि तक कार्यरत रहेगी। हेल्पलाइन प्रतिदिन प्रातः 07 बजे से रात्रि 11 बजे तक निरंतर कार्य करेगी। योजना से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी अथवा समस्या के समाधान के लिए कोई भी किसान, व्यापारी अथवा संबंधित व्यक्ति हेल्पलाइन से संपर्क कर सकता है।

20 लाख हेक्टेयर में रबी फसलों की बोनी

गेहूं की बुवाई 9.37 लाख हेक्टेयर में

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। इस साल रबी सीजन की शुरुआत से ही बारिश होने से रबी फसलों की बुवाई धीमी गति से चल रही है। पिछले हफ्ते प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में बारिश होने से रबी फसलों की बुवाई पर विपरीत असर पड़ा है। कृषि संचालनालय से प्राप्त जानकारी अनुसार 31 अक्टूबर 2025 तक प्रदेश भर में 20.22 लाख हेक्टेयर में रबी फसलों की बुवाई की गई है। गत वर्ष समान अवधि में यह बुवाई 14.75 लाख हेक्टेयर में की गई थी। गेहूं की बुवाई अभी प्रारंभिक अवस्था में 8.37 लाख हेक्टेयर में की गई है। जो समान अवधि में गत वर्ष की बुवाई 2.66 लाख हेक्टेयर से अधिक है। चना की बुवाई 2.85 लाख हेक्टेयर में की गई है। गत वर्ष समान अवधि में यह बुवाई 3.11



लाख हेक्टेयर में की गई थी। मसूर गत वर्ष की बुवाई 2.21 लाख हेक्टेयर से कम 1.89 लाख हेक्टेयर में बोयी गई है।

राई-सरसों की बुवाई 5.77 लाख हेक्टेयर में हुई है जो गत वर्ष की बुवाई 5.71 लाख हेक्टेयर से अधिक है। रबी की अन्य फसलों में जौ 2 हजार हेक्टेयर, मटर 1 लाख 13 हजार हेक्टेयर एवं अलसी 18 हजार हेक्टेयर में बोयी गई है। उल्लेखनीय है कि चालू रबी सीजन में 138.85 लाख हेक्टेयर में रबी फसलों की बुवाई का लक्ष्य रखा गया है। सबसे अधिक 96.81 लाख हेक्टेयर में गेहूं एवं 17.28 लाख हेक्टेयर में चना की बुवाई प्रस्तावित है।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई (क्षेत्र- लाख हेक्टेयर में)

फसल	सा. क्षेत्र	लक्ष्य	बोनी	गत वर्ष की बोनी
गेहूं	98.10	96.81	9.37	2.66
जौ	0.22	0.34	0.02	0.05
चना	19.34	17.28	2.85	3.11
मटर	1.50	3.30	1.13	0.69
मसूर	6.07	6.36	1.89	2.21
राई सरसों	10.84	12.23	5.77	5.71
अलसी	0.56	1.20	0.18	0.25
गन्ना	1.04	1.33	0.00	0.08
रबी योग	137.67	138.85	20.22	14.75

सब्जियों के उत्पादन पर मिलेगा विशेष अनुदान

भोपाल। प्रदेश में जनजाति बाहुल्य ग्रामों में वनपट्टाधारी परिवारों को सब्जी उत्पादन के प्रति प्रोत्साहित कर उनके सामाजिक और आर्थिक जीवन में सुधार लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके तहत प्रदेश के चार संभाग के 16 जिलों में जनजाति वर्ग के लोगों को वन भूमि पर पैदावार बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत सब्जियों के उत्पादन के लिए विशेष अनुदान दिया जाएगा। अनुदान राशि प्रति हेक्टेयर इकाई लागत का 90 प्रतिशत तक हो सकता है।

आयुक्त उद्यानिकी से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रदेश में नर्मदापुरम संभाग में नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, जबलपुर संभाग में जबलपुर, मंडला, सिवनी, छिंदवाड़ा, कटनी, नरसिंहपुर, डिंडोरी और बालाघाट, शहडोल संभाग में शहडोल, उमरिया और अनूपपुर तथा भोपाल

संभाग में भोपाल और सीहोर जिलों के कोलार बांध के आसपास के वनपट्टाधारी किसानों को योजना का लाभ मिलेगा। इन किसानों को कृषि तकनीकी विशेषज्ञ और मार्केटिंग एक्सपर्ट की सलाह पर उच्च मूल्य वाली सब्जी फसलों जैसे- टमाटर, लौकी, करेला, फूलगोभी, पत्ता गोभी, ब्रोकली ब्रूसेल्स, स्प्राउट, बाकलावली, हरी मटर, बैंगन, शिमला मिर्च, भिंडी, खीर, हरी मिर्च, गाजर चुकंदर, शलजम, मूली, गांठ गोभी, राजमा, शकरकंद, केल-करम साग, सहजना की फली या मुनगा तथा पात्तदार सब्जियों पर अनुदान सहायता राशि उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए किसानों को विभाग के एमपीएफएसटीएस पोर्टल पर ऑनलाइन पंजीयन कराना अनिवार्य है। जिन किसानों का चयन योजना के अंतर्गत किया जाएगा, उनको उद्यानिकी

विभाग द्वारा सब्जी फसल उत्पादन की नवीन तकनीकियों, फसलोत्तर प्रबंधन, विपणन एवं संस्करण और विषयों का प्रशिक्षण भी दिया जायेगा।

रथाई कृषि समृद्धि हेतु समेकित समाधान

- समर्पित एवं प्रशिक्षित कर्मियों द्वारा नवीनतम फार्म प्रौद्योगिकी का प्रचार सुनिश्चित करना।
- अपने व्यापक वितरण जालतंत्र द्वारा एम.ओ.पी., डी.ए.पी., यूरिया एवं अन्य कृषि साधनों को दाम पर पहुंचाना।
- अपने सभी क्लार्कों द्वारा निःस्वार्थ सेवा-आई.पी. का सिद्धांत है।
- भारत की समृद्ध देशों की सूची में सबसे आगे लाने का स्वप्न।
- गन्ना उत्पादकों की सेवा हेतु चीनी उत्पादन में विशेषता।

इंडियन पोटाश लिमिटेड
पोटाश थ्रन, 10 नो. गानेवा पार्क,
मुम्बई रोड, नई दिल्ली-110060.
दूरभाष : 25761940, 25763970,
25732438, 25725084. फ़ैक्स : 25755313

807-808, पंचसौ मीजल, कॉम्प्लेक्स जोन, आशिया पॉल, होजंगाऊद रोड, भोपाल (म.प्र.) फ़ोन : 0755-4053336, 4053337, फ़ैक्स : 0755-4053338

निष्ठा, विश्वसनीयता एवं कृषि श्रेष्ठता का गर्वपूर्ण प्रतीक

फास्फेटिक उर्वरकों की सब्सिडी में वृद्धि

नाइट्रोजन और पोटाश की सब्सिडी दर में बदलाव नहीं

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने मौजूदा रबी सीजन के लिए फॉस्फोरस और सल्फर उर्वरकों पर सब्सिडी बढ़ा दी है। उर्वरक निर्माताओं की बढ़ती आयात लागत और किसानों को मूल्य वृद्धि से राहत देने के लिए 37,952 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। लेकिन नाइट्रोजन और पोटाश के लिए सब्सिडी दर में कोई बदलाव नहीं किया गया। नई दरें इसी माह 1 अक्टूबर से 31 मार्च, 2026 तक प्रभावी रहेंगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल ने फॉस्फोरस पर सब्सिडी पिछले खरीफ सीजन की 43.60 रुपये प्रति किलोग्राम से बढ़ाकर चालू रबी सीजन के लिए 47.96 रुपये प्रति किलोग्राम कर दी है। इस 10 प्रतिशत की वृद्धि के साथ पिछले रबी सीजन से अब तक यह बढ़ोतरी लगभग 56 प्रतिशत रही है। इसी तरह सल्फर पर सब्सिडी को खरीफ के 2.61 रुपये प्रति किलोग्राम से बढ़ाकर मौजूदा रबी में 2.87 रुपये प्रति किलोग्राम कर दिया गया है। सल्फर में भी लगभग 10 प्रतिशत की इस वृद्धि के साथ पिछले रबी सीजन से अब तक लगभग 63

प्रतिशत हो गई है। लेकिन सरकार ने नाइट्रोजन और पोटाश के लिए सब्सिडी दर पहले की तरह क्रमशः 43.02 रुपये प्रति किलोग्राम और 2.38 रुपये प्रति किलोग्राम ही रखी है। फॉस्फोरस और सल्फर के लिए सब्सिडी में वृद्धि मुख्य रूप से फास्फोरिक एसिड, सल्फर और तैयार डाय-अमोनिया फॉस्फेट (डीएपी) दोनों की कीमतें बढ़ने के कारण की गई है।

सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि अनुमोदित सब्सिडी पिछले रबी सीजन से लगभग 14,000 करोड़ रुपये अधिक है। पिछले रबी सीजन के दौरान, सब्सिडी लगभग 24,000 करोड़ रुपये थी। उन्होंने कहा कि आयात मूल्य और पोषक तत्व की आवश्यकता, सब्सिडी का बोझ और अधिकतम खुदरा मूल्य (एमआरपी) जैसे अन्य कारकों को ध्यान में रखते हुए सब्सिडी दर तय की गई है। सरकार ने किसानों को बिना किसी बढ़ी हुई एमआरपी के डाय-अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) और ट्रिपल सुपर फॉस्फेट (टीएसपी) की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष पैकेज प्रदान किया है।

दलहन-तिलहन की रिकॉर्ड खरीद को मिली मंजूरी

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने खरीफ सीजन 2025-26 के लिए तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश में दालों एवं तिलहनों की खरीदी योजनाओं को मंजूरी दी है। इन राज्यों के लिए स्वीकृत कुल खरीद राशि रुपये 15095.83 करोड़ है, जिससे संबंधित राज्यों के लाखों किसानों को व्यापक लाभ मिलेगा।

इन राज्यों के कृषि मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय वचुअल बैठक में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान सहित कृषि एवं किसान कल्याण की योजनाओं के तहत ये



स्वीकृतियां प्रदान की। मध्य प्रदेश में खरीफ 2025-26 के दौरान सोयाबीन की 22,21,632 मीट्रिक टन की मूल्य अंतर भुगतान योजना के तहत लागू होगी, जिसके लिए रुपये 1,775.53 करोड़ के वित्तीय प्रभाव की स्वीकृति केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने दी है। श्री चौहान ने कहा कि ये मंजूरियां इसलिए दी गई हैं, ताकि किसानों को उनकी फसल पर बेहतर लाभ मिल सके और उनकी आय का संरक्षण सुनिश्चित हो, साथ ही किसानों को बाजार के उतार-चढ़ाव से सुरक्षा मिले, जो कि आत्मनिर्भर भारत की दिशा में बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि किसानों की आय और सम्मान की सुरक्षा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

MYCOR_e SUPER

माइकोर सुपर
माइकोराइजल बायोफर्टिलाइजर
दो कदम आगे

धानुका एग्रीटेक लिमिटेड
1800-102-1022

इंडिया का प्रणाम हर किसान के नाम

GroPlus
सर्वोत्तम तकनीक
सफलता का प्रतीक

EnPhos TECHNOLOGY

P फास्फोरस
B बोरॉन
Ca कैल्शियम
S सल्फर
Zn जिंक

शोल्दा अब आ गया है
एनफॉस तकनीक के साथ

निर्जन है 5 अमूल्य
पाषाण तत्वों की कमी

जो अधिक और गुणवत्ता
युक्त उत्पादन सुनिश्चित करे

साप्ताहिक सुविचार

वहीं उन्नत करता है जो स्वयं अपने को उपदेश देता है।
- स्वामी रामतीर्थ

रबी फसल उत्पादकता बढ़ाना जरूरी

रबी फसल बुवाई प्रारम्भ हो चुकी है। इस वर्ष मध्यप्रदेश में 147 लाख हेक्टेयर में रबी फसलें बोने का कार्यक्रम बनाया गया है। सबसे अधिक गेहूं की बुवाई एक सौ लाख हेक्टेयर के लगभग किया जाना है। पिछले साल 93 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया था। प्रदेश में रबी फसलों का यह क्षेत्र पिछले 10 वर्षों से यथावत है। किसी जमाने में घने का रकबा 35

लाख हेक्टेयर से अधिक रहता था जो अब घटकर 25 लाख हेक्टेयर तक सिमट गया है। घना उत्पादन में मध्यप्रदेश देशभर में शीर्ष पर रहता है लेकिन ऐसा लग रहा है कि जैसे-जैसे घना का रकबा कम हो रहा है यह तमगा कमी भी छिन सकता है। प्रदेश में उत्पादन की दृष्टि से सभी फसलों की उत्पादकता औसत राष्ट्रीय उत्पादन से काफी कम है। फसल उत्पादकता कम होने का प्रमुख कारण है असंतुलित उर्वरक उपयोग एवं पौषक तत्व प्रबंधन का अभाव। किसान माई सामान्यतः फसलों में यूरिया एवं डीएपी के अलावा अन्य पौषक तत्व आधारित उर्वरकों का उपयोग नाम मात्र का करते हैं। मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट्स बतलाती है कि प्रदेश की मिट्टी में आवश्यक पौषक तत्वों की भारी कमी है। 16 तत्वों में से मात्र दो या तीन ही दिये जाने के कारण मिट्टी की परत अत्यधिक कठोर हो गई है। इसके लिये जरूरत है मिट्टी को पुनर्जीवन प्रदान करने की। संतुलित उर्वरक, मिट्टी परीक्षण के आधार पर एवं आवश्यक पौषक तत्वों का दिया जाना जरूरी है। फसलों का उत्पादन बढ़ाने से ही किसानों की आमदनी बढ़ सकती है। उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग एवं खेती में प्रयोग किये जाने वाले नवाचार से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। फसल उत्पादन बढ़ाने के लिये किसानों को उन्नत तकनीकी का प्रशिक्षण दिया जाना अत्यंत आवश्यक है। खेती में फसल विविधिकरण एवं नकदी फसलों को प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है। खेती के साथ उद्यानिकी, पशुपालन, मछलीपालन, रेशमपालन, कुक्कुटपालन इत्यादि किसानों को आर्थिक उन्नति की राह दिखा सकते हैं। खेती में उत्पादन लागत निरंतर बढ़ने से किसानों को खेती से घाटा हो रहा है। फसलों का उत्पादन बढ़ने से यह घाटा कम हो सकता है। समय पर बुवाई एवं अन्य कृषि कार्यों का बेहतर प्रबंधन करके खेती से उत्पादन बढ़ाना जाना चाहिये।

कृषक दूत
सम्पादकीय

अधिक रहता था जो अब घटकर 25 लाख हेक्टेयर तक सिमट गया है। घना उत्पादन में मध्यप्रदेश देशभर में शीर्ष पर रहता है लेकिन ऐसा लग रहा है कि जैसे-जैसे घना का रकबा कम हो रहा है यह तमगा कमी भी छिन सकता है। प्रदेश में उत्पादन की दृष्टि से सभी फसलों की उत्पादकता औसत राष्ट्रीय उत्पादन से काफी कम है। फसल उत्पादकता कम होने का प्रमुख कारण है असंतुलित उर्वरक उपयोग एवं पौषक तत्व प्रबंधन का अभाव। किसान माई सामान्यतः फसलों में यूरिया एवं डीएपी के अलावा अन्य पौषक तत्व आधारित उर्वरकों का उपयोग नाम मात्र का करते हैं। मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट्स बतलाती है कि प्रदेश की मिट्टी में आवश्यक पौषक तत्वों की भारी कमी है। 16 तत्वों में से मात्र दो या तीन ही दिये जाने के कारण मिट्टी की परत अत्यधिक कठोर हो गई है। इसके लिये जरूरत है मिट्टी को पुनर्जीवन प्रदान करने की। संतुलित उर्वरक, मिट्टी परीक्षण के आधार पर एवं आवश्यक पौषक तत्वों का दिया जाना जरूरी है। फसलों का उत्पादन बढ़ाने से ही किसानों की आमदनी बढ़ सकती है। उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग एवं खेती में प्रयोग किये जाने वाले नवाचार से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। फसल उत्पादन बढ़ाने के लिये किसानों को उन्नत तकनीकी का प्रशिक्षण दिया जाना अत्यंत आवश्यक है। खेती में फसल विविधिकरण एवं नकदी फसलों को प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है। खेती के साथ उद्यानिकी, पशुपालन, मछलीपालन, रेशमपालन, कुक्कुटपालन इत्यादि किसानों को आर्थिक उन्नति की राह दिखा सकते हैं। खेती में उत्पादन लागत निरंतर बढ़ने से किसानों को खेती से घाटा हो रहा है। फसलों का उत्पादन बढ़ने से यह घाटा कम हो सकता है। समय पर बुवाई एवं अन्य कृषि कार्यों का बेहतर प्रबंधन करके खेती से उत्पादन बढ़ाना जाना चाहिये।

किसान ऑनलाइन बुक कर सकेंगे बीज: श्री चौहान

केंद्रीय कृषि मंत्री ने आधुनिक बीज प्रसंस्करण संयंत्र का किया शुभारंभ



नई दिल्ली। किसानों के लिए अब बीज लेना आसान हो सकता है। केंद्र सरकार किसानों को बीज की ऑनलाइन बुकिंग करने की सुविधा देने जा रही है। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने छोटे किसानों को भी अच्छी गुणवत्ता का बीज उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। श्री चौहान ने राष्ट्रीय बीज निगम (एनएससी) के अत्याधुनिक बीज प्रसंस्करण संयंत्र का उद्घाटन किया।

श्री चौहान ने पूसा परिसर दिल्ली में राष्ट्रीय बीज निगम के नव-स्थापित अत्याधुनिक सब्जी एवं पुष्प बीज प्रसंस्करण संयंत्र और पैकिंग इकाई का उद्घाटन किया। इस संयंत्र की क्षमता 1 टन

प्रति घंटा है। उन्होंने इसके अलावा एनएससी के बरेली, धारवाड़, हसन, सूरतगढ़ और रायचूर स्थित पांच बीज प्रसंस्करण संयंत्रों का भी वर्चुअल उद्घाटन किया। इन पांचों संयंत्रों की क्षमता 4 टन प्रति घंटा है।

श्री चौहान ने कहा कि इन संयंत्रों से किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की सहज उपलब्धता सुनिश्चित होगी। जिससे कृषि उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। ये नए संयंत्र किसानों की जरूरतें पूरी करेंगे। कृषि मंत्री चौहान ने किसानों के लिए 'बीज प्रबंधन 2.0' प्रणाली और ऑनलाइन बीज बुकिंग प्लेटफॉर्म का भी शुभारंभ किया।

भावांतर योजनांतर्गत 27 हजार 63 किसानों से 47 हजार 493 टन सोयाबीन की खरीदी

भोपाल। प्रदेश में सोयाबीन फसल के लिए लागू की गई भावांतर योजना में 9 लाख 36 हजार 352 किसानों ने पंजीयन कराया है। सोयाबीन का विक्रय 24 अक्टूबर से प्रारंभ हुआ है जो 15 जनवरी 2026 तक जारी रहेगा। अभी तक 27 हजार 63 किसानों से 47 हजार 493 टन सोयाबीन खरीदी गई है।

28 अक्टूबर को 10 हजार 851 किसानों से 19 हजार 191 टन सोयाबीन की खरीदी हुई। कृषि उपज मंडी देवास में सर्वाधिक 1699, इंदौर में 1579, उज्जैन में 1538, गंजबासौदा में 1283, बैरसिया में 1154, आगरा में 1085, आष्टा में 1061, शाजापुर में 1053, तराना में 1040 एवं सागर मंडी में 962 टन सोयाबीन की खरीदी हुई। इसी प्रकार सर्वाधिक किसानों के पहुंचने की टॉप मंडियों में

गंजबासौदा मंडी में 1254, देवास में 1182, उज्जैन में 1106, आष्टा में 1075, बैरसिया में 900, आगरा में 891, इंदौर में 795, शाजापुर में 787, सीहोर में 741 एवं नरसिंहगढ़ मंडी में 701 किसान सोयाबीन की विक्री के लिए पहुंचे। मंडी बड़नगर जिला उज्जैन में अधिकतम भाव 5725 रूपये प्रति क्विंटल रहा।

प्रदेश में सोयाबीन की बुवाई का रकबा गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में 58.72 लाख हेक्टेयर था जो वर्तमान में 53.20 लाख हेक्टेयर है। इस वर्ष 2025-26 में 55.54 लाख मीट्रिक टन सोयाबीन का उत्पादन हुआ है। भावांतर योजनांतर्गत 3 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक पंजीयन हुए थे। सोयाबीन खरीदी के प्रथम मॉडल भाव की घोषणा 7 नवंबर 2025 को की जाएगी।

प्रदेश की प्रगति में पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान: श्री पटेल

ई-लिस एप सॉफ्टवेयर संबन्धी दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ



भोपाल। पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) लखन पटेल ने कहा है कि प्रदेश की प्रगति में पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत सरकार द्वारा नीति निर्माण में पशुधन सांख्यिकी आंकड़ों की आवश्यकता होती है। संपूर्ण देश में ई-लिस एप सॉफ्टवेयर के माध्यम से इन आंकड़ों को डिजिटलाईज किया जाता है। इस सॉफ्टवेयर का प्रशिक्षण प्राप्त करें और पशुधन संबंधी आंकड़ों के डिजिटलाइजेशन में इनका पूरा उपयोग करें।

श्री पटेल भारत सरकार के मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय द्वारा मध्यप्रदेश राज्य में सेंट्रल एवं बेस्टजोन के मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दादर और नगर हवेली, दमन एवं द्वीव तथा गोवा के राज्यों के नोडल एवं जिला नोडल अधिकारियों के लिए ई-लिस एप सॉफ्टवेयर की दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का राज्य पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान देवी अहिल्या सभागार भोपाल में शुभारंभ कर संबोधित रहे थे।

भारत सरकार के सांख्यिकीय सलाहकार, पशुपालन सांख्यिकी प्रभाग जगत हजारीका ने बताया कि ग्राम स्तर पर एकीकृत नमूना सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त होने वाले आंकड़ों का संकलन करने के बाद विश्व स्तर पर रिपोर्टिंग की जाती है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. प्राची मिश्रा साहू द्वारा सॉफ्टवेयर के उपयोग के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। वीसीआई नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. उमेश चंद्र शर्मा द्वारा देश और प्रदेश की प्रगति में पशुपालन और डेयरी क्षेत्र के योगदान और इससे संबंधित आंकड़ों और उनके डिजिटलाइजेशन के महत्व को रेखांकित किया गया। कार्यशाला में पशुपालन एवं डेयरी संचालक डॉ. पी.एस. पटेल, पशुपालन सांख्यिकी भारत सरकार के संचालक आर.पी.एस. राठौर, पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान के संयुक्त संचालक डॉ. मनोज गौतम, भारत सरकार से सहायक संचालक बैधर स्वाइन, उप संचालक चैतराम मीणा आदि उपस्थित रहे।

अनमोल वचन

सच्चा सुधारक वहीं है जो पहले अपना सुधार करता है।

- हंसराज सुझ

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

कार्तिक शुक्ल/अगहन कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् 2082 ईस्वी सन् 2025

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
04 नवम्बर 25	मंगलवार	कार्तिक शुक्ल-14	पंचक 11.20 दिन तक
05 नवम्बर 25	बुधवार	कार्तिक शुक्ल-15	पूर्णिमा व्रत
06 नवम्बर 25	गुरुवार	अगहन कृष्ण-01	
07 नवम्बर 25	शुक्रवार	अगहन कृष्ण-02	
08 नवम्बर 25	शनिवार	अगहन कृष्ण-03	
09 नवम्बर 25	रविवार	अगहन कृष्ण-04	
10 नवम्बर 25	सोमवार	अगहन कृष्ण-05/06	
11 नवम्बर 25	मंगलवार	अगहन कृष्ण-07	
12 नवम्बर 25	बुधवार	अगहन कृष्ण-08	
13 नवम्बर 25	गुरुवार	अगहन कृष्ण-09	
14 नवम्बर 25	शुक्रवार	अगहन कृष्ण-10	
15 नवम्बर 25	शनिवार	अगहन कृष्ण-11	उत्पन्ना एकादशी
16 नवम्बर 25	रविवार	अगहन कृष्ण-12	
17 नवम्बर 25	सोमवार	अगहन कृष्ण-13	प्रदोष व्रत



श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय
सीनियर जीएम (हेड एग्रोनॉमिस्ट)
आरएमपीसीएल, इन्दौर (म.प्र.)

भू मि की उर्वरा शक्ति को बरकरार रखने के लिये 16 पौषक तत्वों की जरूरत होती है जबकि वर्तमान में किसानों द्वारा केवल दो या तीन पौषक तत्व ही दिये जा रहे हैं।

मिट्टी को स्वस्थ एवं उपजाऊ बनाने के लिये संतुलित एवं पौषक तत्व आधारित उर्वरक उपयोग अत्यंत जरूरी है। इस समय बाजार में छः पौषक तत्वों वाला फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, जिंक, मैग्नीशियम एवं बोरोन युक्त उर्वरक महावीरा जिरोन पावर प्लस उपलब्ध हैं जिसका उपयोग करके मिट्टी की सेहत को बरकरार रखा जा सकता है साथ ही उच्च गुणवत्ता का सरसों पैदा किया जा सकता है।

सरसों के लिये उपयोगी महावीरा जिरोन पावर प्लस

सरसों जैसी तिलहनी फसल के लिये सल्फर अत्यधिक महत्वपूर्ण है इसलिये छः पौषक तत्वों वाला महावीरा जिरोन पावर प्लस सरसों के लिये सबसे उपयुक्त खाद है। इसका उपयोग आधार खाद के रूप में करना चाहिये। दो बैग (100 किलो) महावीरा जिरोन पावर प्लस प्रति एकड़ प्रयोग करने से छः पौषक

महावीरा जिरोन पावर प्लस की प्रमुख विशेषतायें

- छः पौषक तत्वों फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम का अद्भुत मिश्रण।
- दो बैग यानि 100 किलोग्राम प्रति एकड़ अनुशंसित।
- प्रति एकड़ 12 से 15 क्विंटल सरसों का उत्पादन पायें।
- सरसों की खेती से 20 से 30 हजार से अधिक प्रति एकड़ मुनाफा निश्चित।



तत्वों की पूर्ति आसानी से की जा सकती है। यदि किसान भाई शुरू से ही जिंक, बोरोन एवं सल्फर युक्त महावीरा जिरोन पावर प्लस का प्रयोग आधार खाद के रूप में करें तो सरसों से अधिक उत्पादन लिया जा सकता है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध फास्फोरस की मात्रा 16 प्रतिशत, कैल्शियम 19 प्रतिशत एवं सल्फर 11 प्रतिशत रहता है। इसके अलावा 0.5 प्रतिशत जिंक, 0.20 प्रतिशत बोरोन एवं 0.5 प्रतिशत मैग्नीशियम भी उपलब्ध रहता है।

क्यों जरूरी है सरसों में महावीरा जिरोन पावर प्लस ?



महावीरा जिरोन पावर प्लस युक्त खाद मुख्य और पौषक तत्वों का उपयुक्त स्रोत है। महावीरा जिरोन पावर प्लस आवश्यक पौषक तत्वों से भरपूर उच्चतम गुणवत्ता वाली खाद है। विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा अनुशंसित महावीरा जिरोन पावर प्लस सरसों के लिये सर्वश्रेष्ठ खाद बताया गया है। सरसों में महावीरा जिरोन पावर प्लस का प्रयोग करके आवश्यक पौषक तत्वों की आपूर्ति आसानी से की जा सकती है। यह अकेला उर्वरक है जो मिट्टी की उर्वरा शक्ति बरकरार रखते हुये अधिकतम गुणवत्तायुक्त उत्पादन देने में सक्षम है। महावीरा जिरोन पावर प्लस सरसों के लिये विशेष लाभदायक है। यह सरसों की फसल के लिये किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जांचा परखा गया अद्भुत उर्वरक है। सरसों की फसल में महावीरा जिरोन पावर प्लस का उपयोग बुवाई के समय आधार खाद के रूप में प्रयोग करने से प्रति एकड़ 12 से 15 क्विंटल उत्पादन पाकर 20 से 30 हजार रुपये से अधिक प्रति एकड़ मुनाफा कमाया जा सकता है। सरसों की फसल में 2 बोरी यानि 100 किलोग्राम महावीरा जिरोन पावर प्लस बुवाई के समय प्रयोग करने से बेहतर पैदावार ली जा सकती है। सरसों की फसल में अनुशंसित संतुलित उर्वरकों की मात्रा 32:16:10 किलोग्राम प्रति एकड़ करना चाहिये। महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध फास्फोरस फसल में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है तथा जड़ों का विकास अच्छी तरह होता है। बोरोन परागण एवं प्रजनन क्रियाओं में सहायक होता है। बोरोन की पूर्णता से फसल में बौनापन नहीं होता तथा फलियां ज्यादा बनती हैं। जिंक फसल में प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया बढ़ाकर क्लोरोफिल के उत्पादन में सहायक होता है जिससे 25 से 30 प्रतिशत पैदावार बढ़ती है। इसमें उपलब्ध सल्फर तेल के निर्माण में सहायक होता है जिससे 10 प्रतिशत तेल में बढ़ोत्तरी होती है। सरसों के तेल में गंधक ग्लूकोसाइड के निर्माण में सहायक होता है। कैल्शियम जड़ प्रणाली का विकास करता है जिसके परिणामस्वरूप पौधों का विकास अच्छा होता है। मैग्नीशियम पौधों को हरा-भरा एवं स्वस्थ रखता है। जिन किसानों ने महावीरा जिरोन पावर प्लस गत वर्ष सरसों की फसल में प्रयोग किया है वे सभी इसके असरकारक परिणाम से उत्साहित हैं।

महावीरा जिरोन की कहानी-किसान की जुबानी

महावीरा जिरोन पावर प्लस का कोई विकल्प नहीं



लुधियाना। जिले के श्यामपुर के उन्नत कृषक श्री गुरशरण सिंह तीन साल से महावीरा जिरोन का उपयोग आलू, प्याज एवं मक्का की फसल में कर रहे हैं। इस खाद के परिणाम से श्री सिंह अत्यधिक उत्साहित हैं। कृषक ने बताया कि

पहले वे डीएपी का उपयोग करते थे। डीएपी के कारण मिट्टी अत्यधिक कठोर होती जा रही थी। इसलिये अब उन्होंने महावीरा जिरोन डालना शुरू किया है। गुरशरण सिंह ने बताया कि महावीरा जिरोन में फास्फोरस, सल्फर, कैल्शियम, जिंक, बोरोन होने से सभी आवश्यक पौषक तत्वों की आपूर्ति होती है। इससे फसल का उत्पादन एवं गुणवत्ता दोनों बेहतर रहती है। पिछले साल आलू में डाला था महावीरा जिरोन जिसके कारण आलू के कंदों का आकार सबसे बड़ा एवं निरोगी चमकदार आलू मिला। इस साल गुरशरण सिंह 10 एकड़ प्याज में महावीरा जिरोन डालने जा रहे हैं। उन्होंने अन्य किसानों को भी महावीरा जिरोन डालने की सलाह दी है।

सरसों की फसल में पौषक तत्व प्रबंधन

सरसों की फसल से बेहतर एवं गुणवत्तायुक्त उत्पादन के लिये बुवाई के समय दो बैग (100 किलोग्राम) महावीरा जिरोन पावर प्लस के साथ 20 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटैश, 15 किलोग्राम यूरिया, 4 किलोग्राम सिमट्रॉन माइकोराइजा एवं 25 किलोग्राम MgSo4 प्रयोग करें।

बुवाई के 25 से 30 दिन बाद 25 किलोग्राम यूरिया एवं 250 मिलीलीटर बलेको एन.पी.के. 11:11:08 आवश्यक रूप से देवें। 50 से 55 दिन की फसल अवधि में 32 किलोग्राम यूरिया, 250 मिलीलीटर एमिट्रॉन-Z एवं 200 मिलीलीटर बोरोन 20 प्रतिशत का छिड़काव करें। जल में घुलनशील उर्वरक 12:61:00 का छिड़काव 45 से 50 दिन की अवधि में, CN+B+ 00:52:34 का तथा 70 से 75 दिन में 13:00:45 अथवा 00:00:50 को 4 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ स्प्रे अवश्य करें।

महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध पौषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यून.%)
फास्फोरस	16
जिंक	0.5
बोरोन	0.20
सल्फर	11
कैल्शियम	19
मैग्नीशियम	0.5

सरसों की फसल में पौषक तत्वों का प्रबंधन (अनुशंसित उर्वरक की मात्रा - KG 32:16:10) प्रति एकड़								
अवधि	ZIRON Power Plus	MOP	UREA	SYMTRON (Mycorrhiza)	AMITRON-Z (Zinc + Amino Acid)	BALECO NPK (11:11:08)	BORON 20%	MgSO4
	KG	KG	KG	KG	ML	ML	ML	KG
बुवाई के समय	100	20	15	4	0	0	0	25
25-30 दिन बाद में	0	0	25	0		250	0	0
50-55 दिन बाद में	0	0	32	0	250	0	200	0
कुल मात्रा KG/GM/ML	100	20	72	4	250	250	200	25
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम /लीटर पानी में	45-50 दिन की अवधि में 12:61:00 का 50-55 दिन की अवधि में CN+B+ 00:52:34 का तथा 70-75 दिन की अवधि में 13.00.45/ 00.00.50 का एक छिड़काव अवश्य करे							
अधिक जानकारी के लिये कंपनी के कस्टमर केयर नं. 8956926412 पर संपर्क किया जा सकता है।								

- डॉ. शुभम मिश्रा
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
- डॉ. प्रतिमा शर्मा
सहायक प्राध्यापक
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान
भोपाल (म.प्र.)

चने का उत्पादन कुल दलहन फसलों के उत्पादन का लगभग 45 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश में चने की खेती लगभग 38 लाख हेक्टेयर में की जाती है। किसानों द्वारा उन्नत तकनीक न अपनाने से उत्पादन काफी कम मिलता है। चने की खेती के लिए जल निकास वाली उपजाऊ भूमि का चयन करना चाहिए। इसकी खेती हल्की व भारी दोनों प्रकार की भूमि में की जा सकती है।

विश्व के कुल चना उत्पादन का 70 प्रतिशत भारत में होता है। देश में कुल उगायी जाने वाली दलहन फसलों का उत्पादन लगभग 17.00 मिलियन टन प्रति वर्ष होता है। चने का उत्पादन कुल दलहन फसलों के उत्पादन का लगभग 45 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश में चने की खेती लगभग 38 लाख हेक्टेयर में की जाती है। किसानों द्वारा उन्नत तकनीक न अपनाने से उत्पादन काफी कम मिलता है। चने की खेती के लिए जल निकास वाली उपजाऊ भूमि का चयन करना चाहिए। इसकी खेती हल्की व भारी दोनों प्रकार की भूमि में की जा सकती है। मानसून के अंत में व बुवाई से पहले अधिक गहरी जुताई न करें। खेत की जुताई करके नमी संरक्षण के लिये पाटा चलायें।

बुवाई विधि : चने की बुवाई कतारों में करें। 7 से 10 सेमी गहराई पर बीज बोना चाहिये। देशी चने के लिये कतार से कतार की दूरी 30 सेमी एवं काबुली चने को 45 सेमी दूर बोना चाहिये।

बुवाई का समय : चने की बुवाई में समय का ध्यान अवश्य रखें। अक्टूबर के शुरू से नवम्बर प्रथम सप्ताह तक का समय बोनी के लिये सर्वाधिक उपयुक्त होता है।

चने की उन्नत किस्में

उन्नत किस्म	पकने की अवधि	औसत पैदावार (क्वि./हे.)
जवाहर चना-74	110-115	15-18
जेजी-11	100-110	15-18
जेजी-130	110-115	18-20
विशाल	110-115	20-25
जेजी-6	110-115	20-21
जवाहर चना-218	115-120	15-20
विजय	115-120	12-15
आरव्हीजी-201	100-105	20-25
आरव्हीजी-202	100-105	18-20
जवाहर चना-11	115-125	15-20
जवाहर चना-130	97-105	15-20
जवाहर चना-16	110-115	15-20
जवाहर चना-315	115	15-20
जेजी-14	100-105	22-25
जाकी-9218	100-110	18-20

गुलाबी

जेजीजी-1	120-125	14-16
----------	---------	-------

काबुली

जेजीके-1	90-110	18-19
जेजीके-2	100-110	18-20
आरव्हीएसजीकेजी-102	95-104	12-15

बीज की मात्रा

देसी किस्मों के लिए 80-90 किलो बीज

चने की बुवाई



बीजोपचार पश्चात करें

प्रति हेक्टेयर डालें और 100 किलो बीज प्रति हेक्टेयर काबुली किस्मों के लिए डालें।

उर्वरकों का प्रयोग

मिट्टी की जांच के हिसाब से ही उर्वरक का प्रयोग करना चाहिए। अर्सिंचित क्षेत्रों में 10 किलो नाइट्रोजन और 25 किलो फास्फोरस और सिंचित क्षेत्र में बुवाई से पहले 20 किलो नाइट्रोजन और 40 फास्फोरस प्रति हेक्टेयर सीड ड्रिल के माध्यम से आखिरी जुताई के समय डालना चाहिए।

अत्यधिक जरूरी बीजोपचार

जड़ गलन व उकटा रोग की रोकथाम के लिए कार्बेन्डाजिम 0.75 ग्राम और थाइरम एक ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज को उपचारित करें। जहां पर दीमक का प्रकोप हो वहां 100 किलो बीज में 800 मिली लीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ईसी मिलाकर बीज को उपचारित करें। बीजों को राइजोबिया कल्चर और पीएसबी कल्चर से उपचार करने के बाद ही बोयें। एक हेक्टेयर क्षेत्र के बीजों को उपचारित करने के लिए तीन पैकेट कल्चर पर्याप्त होता है। बीज उपचार करने के लिए आवश्यकतानुसार पानी गर्म करके गुड़ घोलें। इस गुड़ पानी के घोल को ठंडा करने के बाद कल्चर को इसमें अच्छी तरह मिलाएं। इसके बाद कल्चर मिले घोल से बीजों को उपचारित करें और छाया में सुखाने के बाद जल्दी ही बुवाई करें। सबसे पहले कवकनाशी, फिर कीटनाशी और इसके बाद राइजोबियम कल्चर से बीजोपचार करें। बीज जनित रोगों से बचाने हेतु ट्राइकोडरमा 2.5 किलो प्रति एकड़, सड़ा हुआ गोबर 50 किलो मिलाएं और फिर जूट की बोरियों से ढंक दें। फिर इस घोल को नमी वाली जमीन पर बिजाई से पहले मिला दें। इससे मिट्टी में पैदा होने वाली बीमारियों को रोका जा सकता है।

बीजों को मिट्टी में पैदा होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए फफूंदनाशक जैसे कि कार्बेन्डाजिम 12 प्रतिशत, मैनकोजेब 63 प्रतिशत डब्लयुपी 2 ग्राम से प्रति किलो बीजों को बिजाई से पहले उपचार करें। बीजों का मैसोराइजोबियम से टीकाकरण करें। इस तरह करने के लिए बीजों को पानी में भिगोकर उन पर मैसोराइजोबियम डालें। टीकाकरण कर बीजों को छांव में सुखाएं। फसलों में बीज उपचार कर लगभग 8-10 प्रतिशत उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। फसलों की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी करने हेतु आवश्यक है कि फसलों में कीड़े/बीमारियों का प्रकोप नहीं हो इसके लिये

सीड ड्रेसिंग ड्रम द्वारा बीजोपचार करें।

सीड ड्रेसिंग ड्रम

- फसलों की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी करने तथा फसलों में कीड़े / बीमारियों का प्रकोप कम से कम हो। इस उद्देश्य से बुवाई से पहले शत-प्रतिशत बीजोपचार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।
- बीज उपचार करते समय एफ.आई.आर. क्रम का अवश्य ध्यान रखें। बीज को सर्वप्रथम फफूंदनाशक, फिर कीटनाशी और अन्त में संवर्ध (कल्चर) से उपचारित करें।
- कटवर्म प्रभावित क्षेत्रों में बीज को 10 मिलीलीटर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. प्रति

किलो बीज की दर से मिलाकर उपचारित करने के बाद बोयें।

- चने में एक हेक्टेयर क्षेत्र के बीज के लिये 600 राइजोबियम कल्चर तथा 600 ग्राम पी.एस.बी. कल्चर का उपयोग करें।

ऐसे करें कल्चर से बीज का उपचार

- एक हेक्टे. के बीज को कल्चर से उपचारित करने हेतु 250 ग्राम गुड़ आवश्यकतानुसार पानी गर्म करके घोल बनायें।
- घोल ठण्डा होने पर इसमें 600 ग्राम जीवाणु खाद मिलायें। इस मिश्रण को एक हेक्टेयर में बोयें जाने वाले बीज में इस

प्रकार मिलायें कि बीजों पर एक परत चढ़ जायें।

- बीजों को छाया में सुखाकर बुवाई करें।

सावधानियाँ

- फसल के अनुसार उपयुक्त कल्चर प्रयोग करें। कल्चर पैकेटों को ठण्डे एवं एवं छायादार जगह पर रखें।
- अन्तिम प्रयोग तिथि से पहले ही कल्चर मिलायें। गुड़ का घोल ठण्डा होने पर ही कल्चर मिलायें।
- उपचारित बीज को छाया में सुखायें एवं उर्वरकों के साथ मिलाकर नहीं बोयें।

Industry Partner

फार्म-टेक इंडिया
आधुनिक कृषि तकनीक की प्रकृत प्रदान

08 09 10 नवंबर 2025
लाभगंगा एक्जोबिशन सेंटर
ए.बी. रोड वार्डपाम, ४ पार्क इंटैर टोटल के पास
इंदौर, मध्य प्रदेश

समय : सुबह 10 बजे से रात 6 बजे तक

कृषि, बागवानी, डेयरी और पशुधन की नवीनतम तकनीकियां पर अंतरराष्ट्रीय कृषि मेला

अवश्य पधारें।
हम सभी किसान भाइयों और बहनों से उपस्थित होने का अनुरोध करते हैं!

लोकेशन के लिए स्कैन करें

किसान समृद्ध, देश खुशहाल

निःशुल्क प्रवेश | निःशुल्क प्रवेश | निःशुल्क प्रवेश

Radeecal | Colossal | LST Fertiliser | GNB

+91 99740 29797, 99740 39797 | agri@farmtechindia.in | www.farmtechindia.in

- **मनोज कुमार तरवरिया**
सहायक प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)
आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय, सीहोर
- **जी.एस. गाठिये** ● **देवेन्द्र पयासी**, वरिष्ठ वैज्ञानिक
अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान
परियोजना, आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय, सीहोर
- **मधुर कुमार तरवरिया**
बी.एम. कृषि महाविद्यालय, खण्डवा (म.प्र.)

चना, विश्व में रबी मौसम में उगायी जाने वाली तीसरी सबसे महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। इसको दालों का राजा भी कहा जाता है। आज बदलते जलवायु परिदृश्य, बढ़ती जनसंख्या और कृषि में आधुनिक तकनीकों के समावेश के कारण अब चना फसल का वैज्ञानिक प्रबंधन पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

भारत में मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र और पंजाब आदि मुख्य चना उत्पादक राज्य हैं। भारत में चने का सबसे अधिक उत्पादन मध्यप्रदेश में होता है। इन सभी राज्यों में देशी एवं काबुली दोनों ही प्रकार की प्रजातियों की खेती की जाती है। चने की उत्पादकता बढ़ाने के लिये उन्नत किस्मों, समय पर बुवाई, राइजोबियम से बीजोपचार, समुचित उर्वरता प्रबंधन, कीटनाशी प्रबंधन और आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई से उत्पादकता में दोगुनी वृद्धि लायी जा सकती है।

भूमि का चयन एवं उसकी तैयारी

चने के लिए भूमि तैयार करने में अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता है। इसकी खेती के लिए हल्की दोमट या दोमट मिट्टी अच्छी होती है। भूमि का चुनाव करते समय यह अवश्य ध्यान दें कि उस भूमि में पानी का जमाव न हो तथा अधिक वर्षा की स्थिति में जल निकास की उचित व्यवस्था हो। भूमि में अधिक क्षारीयता नहीं होनी चाहिये। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से या डिस्क हैरो से करनी चाहिये। तथा बाद की दो जुताई देशी हल अथवा कल्टीवेटर से करनी चाहिए। चना ढेलेदार खेत को पसंद करता है।

जलवायु : चना रबी मौसम की दलहन फसल है। चने की अच्छी वृद्धि एवं पैदावार के लिए बुआई से लेकर कटाई तक 30 से 15 डिग्री सेल्सियस तापमान अच्छा माना जाता है।

मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि: चना एक दलहनी फसल है, जिसकी की जड़ों में राइजोबियम नामक जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करते हैं। इससे मिट्टी में प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है और अगली फसल के लिए मिट्टी उर्वर होती है। जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को मिट्टी में स्थिर करते हैं, जिससे भूमि की प्राकृतिक उर्वरता बढ़ती है।

फसल चक्र में विविधता: चना को गेहूं, सरसों, जौ आदि रबी फसलों के साथ रोटेशन में बोया जा सकता है, जिससे भूमि का बेहतर उपयोग होता है और जिससे रोग और कीटों का प्रकोप कम होता है। यह मिश्रित खेती और अंतरफसल प्रणाली के लिए भी उपयुक्त है।

कम लागत वाली फसल: चना की खेती में सिंचाई, उर्वरक और कीटनाशकों की आवश्यकता कम होती है, जिससे यह कम लागत में अधिक लाभ देने वाली फसल बनती है। सूखा सहनशीलता की वजह से यह वर्षा आधारित क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगाई जाती है।

सूखा प्रतिरोधक क्षमता: यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है, जिससे यह जल-संरक्षण में सहायक होती है।

किसानों की आय का स्रोत: अच्छी उपज और बाजार में मांग होने के कारण यह किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है।

उन्नत किस्मों का चयन: किसी भी फसल का उत्पादन स्तर कई कारकों पर निर्भर होता, जिसमें उपयुक्त किस्म का चुनाव मुख्य है। फसल की किस्म के चुनाव करते समय तापमान, मिट्टी का प्रकार, उसकी जलधारण क्षमता, नमी की उपलब्धता एवं वर्षा की मात्रा आदि ध्यान में रखना चाहिए। हमारे देश में चने के दोनों प्रकार की खेती की जाती है जिसमें देशी चना मुख्यतः उगाया जाता है। काबुली या सफेद चने की खेती बहुत कम क्षेत्रफल में की जाती है क्योंकि इसमें रोग-व्याधियों की समस्या अपेक्षाकृत अधिक होती है जिसके कारण उत्पादन लागत में वृद्धि हो जाती है और उपज कम मिलती है।

चना उत्पादन की उन्नत कृषि विधियां



चने की प्रमुख उन्नत किस्में			
किस्म का नाम	पकने की अवधि	पैदावार (क्वि/हे.)	विशेषताएं
आरवीजी-202	115-120	22-25	पाले से होने वाले नुकसान के प्रति अधिक प्रतिरोधी मानी जाता है जो मध्य प्रदेश के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई है और यह किस्म सूखी जड़ सड़न, कॉलर सड़न और मुरझाने (विल्ट) जैसी बीमारियों के प्रति भी प्रतिरोधी है।
आरवीजी-204	115-120	18-22	यह चने देशी किस्मों है जो की हार्वैस्टर से काटी जा सकती है, जिससे किसानों की लागत कम होती है और यह किस्म उकठा रोग के प्रति प्रतिरोधी है।
जे.जी.-130	105-115	18-20	मध्यम ऊंचाई, सीधे पौधे, एक फली, उकठा रोग, सहन शक्ति, अधिक उपज, मोटे दाने
पूसा मानव	110-115	22-25	इस किस्म को मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड क्षेत्र, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान के कुछ भागों में बुवाई के लिए उपयुक्त है।
पूसा समृद्धि	110-115	20-22	यह किस्म उकठा रोग के प्रति प्रतिरोधी है। यह किस्म सूखा और जल की कमी को सहन करने में सक्षम है। इसके मूरे और बड़े आकार के बीज होते हैं।
पूसा विजय	105-110	18-20	जल्दी एवं देरी से दोनों समय में बोई जा सकती है। सिंचित क्षेत्र में इसकी फसल 105 दिन और असिंचित क्षेत्र में इसकी फसल 90 तैयार हो जाती है।
फुले विक्रम	110-115	22-25	चने की एक उच्च-उपज देने वाली किस्म है। यह सूखा सहन करने वाली और उच्च प्रोटीन स्तर वाली एक उन्नत किस्म है, उपयुक्त क्षेत्र- मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, बुंदेलखंड (उत्तर प्रदेश), राजस्थान के कुछ भाग।
आर.एस.जी.-974 (अमिल्लाषा)	125-130	20-25	यह किस्म पिछेती एवं बरानी खेती हेतु उपयुक्त है। इसके पौधे मध्यम ऊंचाई वाले तथा शाखाएं बैंगनी रंग की धारियायुक्त होती हैं। पत्तियों का रंग गहरा हरा तथा फूल बैंगनी लाल होते हैं। यह किस्म उकठा, जड़ गलन एवं बी.जी.एम. रोगों हेतु प्रतिरोधी क्षमता रखती है। साथ ही यह पाला सहन करने की क्षमता भी रखती है।

बीज उपचार

चने में अनेक प्रकार के कीट एवं बीमारियां हानि पहुंचाते हैं। इनके प्रकोप से फसल को बचाने के लिए बीज को उपचारित करके ही बुवाई करनी चाहिये। बीज को उपचारित करते समय ध्यान रखना चाहिये कि सर्वप्रथम उसे फफूंदनाशी, कीटनाशी तथा अन्त में राजोबियम कल्चर से उपचारित करें। जड़ गलन व उकठा रोग की रोकथाम के लिए बीज को कार्बेन्डाजिम या मैन्कोजेब या थाइरम की 1.5 से 2 ग्राम मात्रा

द्वारा प्रति कि.ग्रा. बीज दर से उपचारित करें। दीमक एवं अन्य भूमिगत कीटों की रोकथाम हेतु क्लोरोपाइरीफोस 20 ईसी या एन्डोसल्फॉन 35 ईसी की 8 मिलीलीटर मात्रा प्रति किलो बीज दर से उपचारित करके बुवाई करनी चाहिये। अन्त में बीज को राइजोबियम कल्चर के तीन एवं फास्फोरस घुलनशील जीवाणु के तीन पैकेटों द्वारा एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए आवश्यक बीज की मात्रा को उपचारित कर बुवाई करें। उपचारित बीज को छाया में सूखाकर बुवाई करना चाहिये। (शेष पृष्ठ 16 पर)

रामा फॉस्फेट्स लिमिटेड
इकाईची : इन्दौर • उदयपुर • पुणे • निवाहेड़ा

2014, के.एस. स्टोन, इन्दौर-उज्जैन रोड, गान राजौरा, धरमपुरी के पास, लक्ष्मीन सांवेर, गिला इन्दौर, हेल्पलाइन नंबर: 74608-36083
E-mail: customercare@ramagroup.co.in

- अनिल कुमार सिंह ● सिद्धार्थ नायक
 - ऋचा सिंह ● दिनेश कुमार सिंह
 - अक्षता तोमर ● रश्मि शुक्ला
- कृषि विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू
कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

भा रत में 22-24 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में दलहनी फसलें एकल एवं मिश्रित/अंतरवर्ती फसल दोनों रूप में उगाई जाती हैं। हरित क्रान्ति के दौरान दलहन की खेती बहुत प्रभावित हुई एवं दलहन का क्षेत्रफल कम हो गया। चावल-गेहूं फसल प्रणाली द्वारा दलहनी फसलों को हाशिए पर ला दिया गया किन्तु मध्य एवं दक्षिणी क्षेत्रों में दलहन के विस्तार ने कुछ हद तक भरपाई की।

हालिया समय में दलहनों में छोटी अवधि, रोग प्रतिरोधी एवं उच्च पैदावार वाली किस्मों के विकास ने दलहन को अन्य फसलों के विकल्प में रूप स्थापित कर दिया है साथ ही द्विफसल प्रणालियों में विस्तार के लिये एक आधार प्रदान किया है। पौष्टिक भोजन एवं चारा के रूप में अपने मूल्यों के कारण दालों ने जीवन निर्वाह फसलों में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। विभिन्न परिस्थितिक क्षेत्रों में विभिन्न दलहनी फसलें एकल फसल के तहत अंतरवर्ती फसल, रिले क्रॉपिंग, केच क्राप एवं हरी खाद के रूप में उगाई जाती हैं। शुष्क क्षेत्रों में दलहनी फसलों को कम पानी आवश्यकता एवं कम लागत के कारण बहुत ही अच्छे विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। प्रतिकूल मौसम में टिकाऊ उत्पादन के लिये अंतरवर्ती फसल में दलहन को विशेष स्थान दिया जा रहा है। बाजारों में मिलने वाले अच्छे भावों के कारण परंपरागत फसल प्रणालियों में दलहन आधारित फसल प्रणाली का समावेश किया जा रहा है जिनमें से कुछ स्पष्ट उदाहरण जैसे धान-गेहूं-मूंग, धान-चना/मसूर, अरहर-गेहूं, धान-उड़द/मूंग, सोयाबीन+अरहर, मसूर/चना/बटरी, मूंगफली+अरहर, आलू+राजमा आदि हैं।

फसल प्रणाली

यह सालभर में उगाई जाने वाली एक या अधिक फसलों का रूप है जो कम से एक के बाद एक मौसम आधारित दशा में लगाई जाती हैं। सामान्य रूप में छोटी अवधि की फसलें साल में दो या अधिक एवं चार फसलें तक बोई जा सकती हैं। जिससे फसल एवं भूमि का बेहतर उपयोग हो जाता है। अलग-अलग पारिस्थिकी क्षेत्रों के अनुसार कुछ दलहन आधारित फसल प्रणालियों का वर्णन किया जा रहा है।

धान-चना/मसूर: देश में दिसम्बर-जनवरी में बोने के लिये गेहूं की कई किस्में विकसित की गईं। इससे धान-गेहूं फसल प्रणाली के क्षेत्र में बहुत बढ़ोत्तरी हुई किन्तु इस प्रणाली से मिट्टी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा। भारत में लगभग 15 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र धान-परती के अंतर्गत आता है। इस क्षेत्र में दलहन उत्पादन के लिये कई फसलों पर प्रयोग किए गये। बेहरामपुर में लोबिया अन्य फसलों की तुलना में धान-परती में उगाने पर सबसे अधिक उत्पादकता देती है उसके बाद उड़द का नम्बर आता है। किन्तु रायपुर कृषि वि.वि. में किए गए प्रयोगों से यह सिद्ध होता है कि तिवड़ा की उत्पादकता धान-परती में सभी से अधिक होती



आधारित कृषि प्रणाली का महत्व

विभिन्न पारिस्थितिकी क्षेत्रों में अपनाई जाने वाली महत्वपूर्ण दलहन आधारित फसल प्रणालियां

पारिस्थितिकी क्षेत्र	राज्य	वार्षिक वर्षा मि.मी.	फसल प्रणालियां
पश्चिमी हिमालय क्षेत्र	जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश	1650-2000	धान-चना/मसूर/मटर, मक्का-चना/मटर, रागी-चना/मसूर/मटर, मक्का/उड़द/मूंग/गेहूं, अरहर-गेहूं, उड़द/मूंग-सरसों
पूर्वी हिमालय क्षेत्र	आसाम, पश्चिम बंगाल, मणिपुर मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश	1840-3530	समर धान - उड़द, उड़द/मूंग/गेहूं, अरहर-गेहूं/ उड़द/मूंग
निचला गंगा मैदानी क्षेत्र	पश्चिम बंगाल	1300-1600	मक्का-चना/मटर, रागी-चना/मसूर/मटर, मक्का-सरसों
मध्य गंगा का मैदान क्षेत्र	उत्तर प्रदेश, बिहार	1200-1470	मक्का-गेहूं-गर्मी की मूंग मक्का/उड़द - आलू / मसूर/मटर
उत्तरी गंगा का मैदान क्षेत्र	उत्तर प्रदेश	720-980	धान-गेहूं-गर्मी की मूंग आलू/मसूर/मटर मक्का/ उड़द/ज्वार-चना
ट्रान्स गंगा का मैदान	पंजाब, हरियाणा	360-890	मक्का-आलू-गर्मी की मूंग/उड़द, धनिया/मक्का-गेहूं-गर्मी की मूंग/उड़द, मक्का-अर्ली/लेट आलू- गर्मी की मूंग/उड़द, धान-चना/मसूर, मक्का-चना/मसूर/अरहर
पूर्वी प्लेटो एवं हिल्स	मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा पश्चिम बंगाल	1270-1430	शीघ्र पकने वाली धान- उड़द, धान-धान लोबिया, जूट-मक्का- लोबिया, जूट- उड़द
मध्य प्लेटो एवं हिल्स	म.प्र., राजस्थान, उत्तर प्रदेश	490-1570	ज्वार (अनाज/चाय) चना फेलो-चना ज्वार/अरहर-फेलो, बाजरा+अरहर-फेलो, धान/ मक्का-चना/ मसूर/ मटर/मोथ/ मूंग उड़द -गेहूं, बाजरा-चना
केमोर प्लेटो एवं हिल्स	महाराष्ट्र मध्यप्रदेश राजस्थान	600-1040	उड़द -रबी ज्वार, ज्वार-आलू-मूंग, कपास+ उड़द/मूंग-फेलो, ज्वार-गेहूं- लोबिया/ मूंग कपास/ज्वार/चना
दक्षिणी प्लेटो एवं हिल्स	आंध्रप्रदेश तमिलनाडु कर्नाटक	680-1000	मक्का-ज्वार/अरहर ज्वार-चना, बाजरा-हार्सगाम, मूंग/उड़द-कुसुम, धान-मूंग/ उड़द/ लोबिया, मूंग-ज्वार/कुसुम/मूंग, अरहर-धान-धान, मूंग/ उड़द -लोबिया
पूर्वी कास्ट मैदान	उड़ीसा आंध्रप्रदेश तमिलनाडु पांडिचेरी	780-1290	धान-मूंग/उड़द धान-धान/ एवं हिल्स मूंग/ उड़द धान-मक्का/ लोबिया, मक्का-हार्सगाम/अरहर चना
पश्चिमी कास्ट मैदान एवं हिल्स	तमिलनाडु केरल, गोआ, कर्नाटक महाराष्ट्र	2230-3640	धान- उड़द / लोबिया /चना गन्ना उड़द
गुजरात मैदानी एवं हिल्स	गुजरात	340	उड़द -कुसुम/नाइजर, काउपी-कुसुम, मूंग-टोबैको, बाजरा/ज्वार+अरहर-चना
पश्चिमी सूखा क्षेत्र	राजस्थान	400	धान/कपास-चना, बाजरा/ज्वार-चना+सरसों, सोयाबीन/मूंग-गेहूं
आइसलैंड	अण्डमान एवं निकोबार आइसलैंड लक्षदीप आइसलैंड	1500-3090	धान-मक्का/धान- उड़द

है उसके बाद मसूर एवं मूंग का का नम्बर आता है। भारतीय दलहन अनुसंधान केन्द्र कानपुर में किये गए प्रयोगों में यह सिद्ध हुआ कि मसूर, तिवड़ा, चना, मटर एवं राजमा की फसल धान के बाद ज्यादा उत्पादन देती है। हाल के वर्षों में 15-20 क्विं. उपज देने वाली एवं देर से बोने वाली चने की कई किस्मों का विकास किया गया है जो कि धान-चना फसल प्रणाली में सटीक बैठती हैं जिसने किसानों को धान-चना फसल प्रणाली अपनाने के लिए प्रेरित किया। चना को विभिन्न क्षेत्रों में नगदी फसल के रूप में उगाया जाता है। सिंचाई की दृष्टि चना गेहूं से कम पानी वाली फसल के रूप में जानी जाती है। इस प्रणाली के तेजी से फैलाने में चने में लगने वाले कीट जैसे फली छेदक, हेलियोथिस, बोटाईटिस ग्रेमोल एवं उकठा रोग तथा मृदा खराब स्वास्थ्य के कारण अंकुरण पर प्रभाव आदि मुख्य बाधाएं हैं।

सोयाबीन-चना/मसूर: यह प्रणाली मुख्यतः मध्यप्रदेश में सबसे अधिक प्रचलित है। सोयाबीन के बाद बोई वाली फसल चना लगभग सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में प्रचलित है। मसूर सोयाबीन के बाद मुख्यतः बुन्देलखण्ड एवं मालवा के कुछ जिलों में उगाई जाती है। यह फसल प्रणाली भूमि के स्वास्थ्य के लिए भी बहुत लाभदायक है। सोयाबीन भी एक दलहनी फसल है जो वायु मण्डल से नाइट्रोजन का एकत्रीकरण भूमि में करती है एवं चना/मसूर भी भूमि में नाइट्रोजन का संचय करती है।

उड़द-चना/मसूर: खरीफ में उड़द का लगभग आठ लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल मध्यप्रदेश में है। जिसमें ज्यादातर क्षेत्रफल बुन्देलखण्ड के अंतर्गत आता है। चूँकि बुन्देलखण्ड में रबी में सिंचाई की सुविधाओं का अभाव है अतः उड़द के बाद चना/मसूर (कम सिंचाई वाली फसलें) प्रणाली प्रसिद्ध एवं फायदेमंद भी है। चूँकि उड़द, चना/मसूर सभी दलहनी फसलें हैं जो मृदा की उत्पादकता को बढ़ाती हैं और सिंचाई वाले क्षेत्रों में उड़द कम दिन की फसल होने कारण इसके बाद चना एवं चने के बाद ग्रीष्म ऋतु में मूंग की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है जिससे साल में तीन फसलें एक ही खेत में ली जा सकती हैं।

मोटे अनाज-चना/मसूर: यह प्रणाली मुख्यतः मध्यप्रदेश के शहडोल एवं डिन्डोरी जिले में अपनाई जाती है जहां पर खरीफ में मुख्यतः मोटे अनाज वाली फसलें जैसे कोदों, कुटकी, रागी आदि उगाई जाती हैं। इन पहाड़ी क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाओं का भी अभाव है साथ ही चना, मसूर दलहनी फसलों को कैंस क्राप के रूप में उगाया जाता है। इन क्षेत्रों में यह प्रणाली सटीक बैठती है।

मृदा पर प्रभाव

मिट्टी के स्वास्थ्य के सुधार लाने और उत्पादकता में सुधार लाने के लिये दलहनी फसलों का फसल प्रणाली में समावेश करना अति आवश्यक हो गया है। जैविक नाइट्रोजन के स्थिरीकरण, कार्बनिक पदार्थों में वृद्धि जिससे पौषक तत्वों की मृदा में मात्रा बढ़ाना आदि में दलहनी फसलों की भूमिका होती है। जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी के उत्पादक गुणों में वृद्धि होती है तथा भौतिक, जैविक एवं रासायनिक गुणों में सुधार होता है। एक दलहनी फसल के बाद दूसरी दलहनी फसलें लगाने से ये भूमि में 40-80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन शेष छोड़ती हैं।

(शेष पृष्ठ 17 पर)

● डॉ. आशीष कुमार त्रिपाठी
वैज्ञानिक, पादप रोग विज्ञान
कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर-11,
देवरी (म.प्र.)

मसूर का दलहनी फसलों में विशेष स्थान है। वारानी क्षेत्रों में अधिकतर दलहनी फसलों के रूप में मसूर की खेती की जाती है। मसूर में 24.2 प्रतिशत प्रोटीन व कैल्शियम प्रचुर मात्रा में होता है।

मसूर का भूसा अत्यन्त पोषिक होता है व जानवर इसे चाव से खाते हैं। इससे दूध की मात्रा बढ़ती है। देश में प्रमुख मसूर उत्पादक राज्य उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आसाम, बिहार, राजस्थान व पश्चिम बंगाल है। कम उत्पादकता के प्रमुख कारणों में सूखा व उकठा रोग प्रतिरोधी किस्मों का कम प्रचलन, अधिक उत्पादन व वोल्ड दाना वाली किस्मों का अभाव, कम उपजाऊ भूमि में मसूर की खेती आदि हैं जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

उपयुक्त भूमि:

मसूर की फसल सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है किन्तु मध्यम से मटियार दोमट मिट्टी इसके लिये उपयुक्त है। बुवाई के समय, हल्की जुताई कर खेत को समतल कर बीज की बुवाई कर खेत में पाटा लगाया जाता है ताकि नमी लम्बे समय तक खेत में बनी रहे।

बुवाई का समय व बीज की मात्रा:

वारानी क्षेत्रों में अर्थात् असिंचित क्षेत्रों में बुवाई 25 सितम्बर से 15 अक्टूबर के बीच तथा सिंचाई सुविधा होने पर 15 अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। समय से बोनी करने पर 40 कि.ग्रा. बीज व देर से बुवाई करने पर 50 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर उपयोग करना चाहिये। कतार से कतार की दूरी 20-25 से.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 2-3 से.मी. रखनी चाहिये। बोने से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम या पूर्व मिश्रित फफूंदनाशक कार्बोक्सिन-थायरम की 2 ग्राम मात्रा या ट्राइकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिये। उपचारित बीज को राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर से निवेशित (उपचारित) करना चाहिए। इस हेतु कल्चर की 8-10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज के मान से उपयोग करना चाहिए।

उन्नत प्रजातियाँ:

अच्छे उत्पादन के लिये आवश्यक है कि बीज शुद्ध हो और उसका अंकुरण प्रतिशत मानक स्तर से कम न हो। स्वस्थ, सुडौल व प्रमाणित बीज जिसका अंकुरण 70 प्रतिशत हो बोने हेतु उपयोग करना चाहिए। मसूर की उन्नत प्रजातियाँ- जे.एल.3, एल 4717, एल 4727, एल 4729, आई.पी.एल. 316, आई.पी.एल. 81, आई.पी.एल. 547, आर व्ही एल 11-6, आर व्ही एल 31, कोटा मसूर -3, कोटा मसूर -4, के. 75 (मलिका) आदि का उपयोग करें।

पोषक तत्व प्रबंधन:

दलहनी फसल होने के कारण मसूर की पोषक तत्व मांग कम रहती है। मसूर की फसल हेतु 20 कि.ग्रा. नत्रजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस, 20 कि.ग्रा. पोटाश व 20 कि.ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर देना आवश्यक है। वारानी क्षेत्रों में जहाँ वर्षा ऋतु की नमी में मसूर की



कम सिंचाई में अधिक लाभ देती दलहनी फसल मसूर की खेती

बुवाई की जाती है वहाँ 10-15 कि.ग्रा. नत्रजन, 20-25 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करना चाहिये। जिन क्षेत्रों में पलेवा लगाकर बुवाई की जाती है वहाँ 15:30:10 के अनुपात में नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश देना चाहिये एवं जहाँ पर सिंचाई की सुविधा हो वहाँ उर्वरकों की पूरी मात्रा उपयोग करना चाहिये।

उर्वरकों के उपयोग के साथ-साथ जैव उर्वरकों (राइजोबियम व पी.एस.बी.) का उपयोग भी आवश्यक है ताकि राइजोबियम द्वारा जड़ों में ग्रंथीकरण ठीक से हो सके व पी.एस.बी. द्वारा भूमि की अनुपलब्ध फॉस्फोरस पौधों को उपलब्ध करायी जा सके।

खरपतवार व सिंचाई प्रबंधन: मसूर की फसल हेतु अधिक मात्रा में नमी की आवश्यकता नहीं होती है परन्तु फली अवस्था पर सिंचाई करने से उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मसूर की फसल व खरपतवारों की प्रतिस्पर्धा अवधि 40-45 दिन है अतः बुवाई से 40-50 दिनों तक खरपतवार नियंत्रण हेतु निंदाई करें।

मसूर के साथ अंतरवर्तीय खेती:

शरद ऋतु में बोये जाने वाले गन्ने के साथ 2:2 अनुपात में मसूर की फसल लेकर करीब 6-8 क्विंटल उत्पादन लिया जा सकता है इससे गन्ने की फसल पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। मसूर-सरसों (8:2) अंतरवर्तीय फसल पद्धति अपनाते से मसूर में लगने वाले माहु कीट का प्रकोप कम होता है।

पौध संरक्षण:

मसूर की फसल की कम उत्पादकता का एक प्रमुख कारण इसमें लगने वाला उकठा रोग व माहु कीट का प्रकोप है अतः समय पर इनका नियंत्रण कर उत्पादन में 30-40 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी की जा सकती है।

उकठा, फफूंदजनित रोग है व इससे मसूर की उपज में 30 प्रतिशत तक की कमी देखी गयी है। रोग प्रकोप से पूरा पौधा, फूल अवस्था के बाद सूख जाता है। रोग से बचाव हेतु उपयुक्त फसल चक्र अपनाये, उकठा अवरोधी जातियों की बुवाई करें व बुवाई पूर्व बीज कार्बेन्डाजिम या पूर्व मिश्रित फफूंदनाशक

कार्बोक्सिन +थायरम की 2 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति कि.ग्रा. के मान से उपचारित कर बोयें। ट्राइकोडर्मा अथवा माईकोराइजा की 1 से 2 किलोग्राम मात्रा को 1 क्विंटल नमी वाली गोबर की खाद में मिलाकर, छाया वाली जगह में 10 से 15 दिन तक पॉलीथीन शीट से ढककर रख दें। हर तीसरे दिन इस मिश्रण को पलटते रहना चाहिए ताकि ट्राइकोडर्मा अथवा

माईकोराइजा सुचारू रूप से पनप सके। इस तरह यह मिश्रण (एक क्विंटल) एक एकड़ भूमि में बिखेर कर मिट्टी में मिला दें।

मसूर की फसल में मुख्यतः

माहु कीट का प्रकोप होता है जो फसल की 45-50 दिन की अवस्था से रस चूसता है जिससे पौधे कमजोर व काले पड़कर सूख जाते हैं तथा उत्पादन में कभी-कभी शत प्रतिशत तक कमी आती है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड अथवा एसिटापिप्रिड अथवा पूर्व मिश्रित कीटनाशी एसिटामीप्रिड-वाईफेनथ्रिन की 100 ग्राम मात्रा को 150 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

कटाई एवं मड़ाई:

जब मसूर के पौधों की पत्तियाँ पीली पड़कर गिरने लगे तब कटाई करना चाहिये। सूखी फसल की मड़ाई कर दानों को सुखाकर 10-12 प्रतिशत नमी पर भण्डारित करना चाहिये।

उपज:

किस्म के अनुसार वारानी क्षेत्रों में 10-12 क्विंटल व सिंचाई करने पर 18-20 क्विंटल मसूर की उपज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। मसूर की फसल की वारानी क्षेत्रों लागत लगभग 15000 रुपये प्रति हेक्टेयर व लाभ 35,000 रुपये तथा सिंचाई वाले क्षेत्रों में लागत 20000 रुपये व लाभ 65,000 रुपये प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है।

किसान भाईयों...

सुपर नहीं 'खेतान' मांगिए

मटर, आलू, लहसुन, प्याज, मक्का, गन्ना, सरसों, गेहूँ, चना आदि रबी फसलों में 'खेतान' डालो और मोटा 'मुनाफा' कमाओ

K9 सुपर जिंक सुपर बोरॉन सुपर यूरिया सुपर

उपज बढ़ाने का सुपर फॉर्मूला

खेतान K9+

सिंगल सुपर फॉस्फेट के साथ जिंक-बोरॉन-मैग्नीशियम (दानेदार)

खेतान डालिए - मुनाफा निकालिए

खेतान केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइज़र्स लि.
फोन: 0731-4200748, 4753666

युनिट - निमरानी (म.प्र.) - ट्रांसो एव व राम मलवा, जिला फतेहपुर (उ.प्र.) - धीनवा (राज.) - राजनांदगांव (छ.ग.) - बहेज (भरुच, गुज.)

किसान हित में हमारा हित निहित है

• पी.एन.त्रिपाठी
कृषि विज्ञान केन्द्र, पन्ना (म.प्र.)

जब बात आती दलहनी सब्जियों की तो किसी भी मौसम या किसी भी सूबे में सब्जी वाली मटर पहले नंबर पर होती है। मटर एक खास सब्जी की फसल है, जो सब्जी के अलावा अन्य पकवानों में भी इस्तेमाल की जाती है। इसमें भरपूर मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन व खनिज लवण पाए जाते हैं। इसके हरे पौधों को तोड़ाई के बाद उखाड़ कर पशुओं के लिए हरे चारे के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हैं।

सब्जी वाली मटर की खेती हमारे देश के मैदानी इलाकों में सर्दियों में और पहाड़ी इलाकों में गर्मियों में की जाती है। मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब व हरियाणा राज्यों में बड़े पैमाने पर इस की खेती की जाती है। मौजूदा समय में मटर की डिमांड हर मौसम में होने की वजह से परिरक्षण द्वारा इस की डब्बाबंदी का कारोबार बढ़ गया है। ऐसे में जरा सी भी सूझबूझ दिखाने पर किसान भाई सब्जी वाली मटर की खेती कर के भरपूर फायदा उठा सकते हैं।

भूमि का चयन व खेत की तैयारी : अम्लीय भूमि सब्जी मटर की खेती के लिए बिल्कुल ठीक नहीं होती है। अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट भूमि जिसका पी.एच मान 6 से 7.0 के बीच हो, सब्जी मटर की खेती के लिए सही मानी जाती है। खेत का पलेवा करके एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और 2 जुताइयां देशी हल व कल्टीवेटर से कर के पाटा लगा कर खेत को भुरभुरा व समतल कर लेना चाहिए।

बोआई का समय व बीज की मात्रा : मटर की बोआई का समय अक्टूबर के पहले सप्ताह से ले कर नवंबर के अंतिम सप्ताह तक होता है। अगेती बोआई के लिए 120 से 150 किलोग्राम और मध्य व पछेती बोआई के लिए 80 से 100 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से रखते हैं।

प्रजातियां : बेहतर तो यही होगा कि किसान अपने इलाके के मुताबिक रोगरोधी प्रजातियों का चयन कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक से सलाह लेकर करें, फिर भी यहां कुछ प्रजातियों की जानकारी दी जा रही है।

बोआई : जड़ सड़न, तना सड़न, एंथ्रेक्नोज, बैक्टेरियल ब्लाइट व उकठा बीमारियों से बचाव के लिए बीजों को 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम या वीटावैक्स प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित कर के बोआई करें। पीएसबी कल्चर व राइजोबियम कल्चर 10 ग्राम/मिली की दर से बीजों को उपचारित कर के बोने से 10 से 15 फीसदी तक उत्पादन में इजाफा होता है। उकठा रोग से बचाव के लिए ट्राइकोडर्मा फफूंदनाशक से 30 किग्रा प्रति हेक्टेयर 200 किग्रा पानी गोबर की खाद या केंचुआ खाद में मिलाकर बोनी पूर्व खेत में मिला दें। बोआई सीडड्रिल से करें या देशी हल के पीछे कूड़ों में सीधी कतार से कतार 30 सेमी. की दूरी पर और मध्यम अवधि की प्रजातियों को 45 सेमी की दूरी पर बोएं। पौध से पौध की दूरी 10 से 15 सेमी रखनी चाहिए। बीजों की बोआई 5-7 सेमी गहराई पर करें।

खाद व उर्वरक : उर्वरक प्रबंधन मृदा परीक्षण आधारित अनुषंसित मात्रा का उपयोग

मटर की उन्नत खेती

किस्में	विशेषताएं	उपयुक्त क्षेत्र
अर्किल	7-8 दानों से भरपूर गहरे रंग की 8-9 सेंटीमीटर लंबी हसियानुमा बेहद आकर्षक फलियां, 50-55 दिनों की फसल व 40-70 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार	सभी जगह
पंत सब्जी मटर-3	10-12 दानों से अच्छी तरह से भरे हुए झुर्रीदार हरे बीज, अर्किल से थोड़ी लंबी फलियां, 90 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पैदावार देने वाली प्रजाति	बिहार, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश के तराई व पर्वतीय क्षेत्र, उत्तराखंड, पंजाब व मध्यप्रदेश बिहार, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश के तराई व पर्वतीय क्षेत्र, उत्तराखंड, पंजाब व मध्यप्रदेश
पंत सब्जी मटर-4	70 दिनों की अगेती प्रजाति, 90 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार, चूर्णिल आसिता (पाउड्री मिलड्यू) रोग के प्रति प्रतिरोधी	बिहार, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश के तराई व पर्वतीय क्षेत्र, उत्तराखंड, पंजाब व मध्यप्रदेश
पंत सब्जी मटर-4	अगेती प्रजाति, लंबी फलियां, हरे झुर्रीदार बीज, 90-100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार, चूर्णिल आसिता (पाउड्री मिलड्यू) रोग के प्रति प्रतिरोधी	बिहार, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश के तराई व पर्वतीय क्षेत्र, उत्तराखंड, एवं पंजाब
पंत सब्जी मटर-5		

करना चाहिए। परन्तु सब्जी मटर की खेती में मोटे तौर पर 20 टन खूब पकी एफवाईएम (खाद), 25 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 30 किलोग्राम पोटाशयुक्त उर्वरक प्रति हेक्टेयर देना बेहतर होता है। नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का ज्यादा इस्तेमाल नाइट्रोजन स्थिरीकरण और गांठों के निर्माण में बाधा पहुंचाता है। मटर की खेती में फास्फेटिक उर्वरक अच्छा नतीजा देता है। इससे गांठों का निर्माण अच्छा होता है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा और फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बोआई के समय देना चाहिए तथा 25-30 दिनों बाद नत्रजन की शेष मात्रा टाप ड्रेसिंग के रूप में देना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण : बोआई के समय ही खरपतवारों का रासायनिक विधि द्वारा नियंत्रण करना चाहिए। इसके लिए पेडीमैथलीन 30 ईसी की 3.3 लीटर मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोल कर बोआई के बाद 3 दिन के अन्दर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। बोआई के 25-30 दिनों बाद निराई-गुड़ाई करने से खरपतवार नियंत्रण के साथ ही साथ जड़ों को हवा भी मिल जाती है।

सिंचाई : पहली सिंचाई फूल आते समय करनी चाहिए। यदि बारिश हो जाए तो सिंचाई न करें। दूसरी सिंचाई फलियां बनते समय करनी चाहिए। सूखे इलाकों में बौछारी सिंचाई बेहतर होती है।

रोग प्रबंधन

चूर्णिल आसिता : यह एक बीजजनित बीमारी है। यह बीमारी तना, पत्तियों व फलियों को प्रभावित करती है। इस बीमारी में पत्तियों पर हल्के गोल निशान बन जाते हैं, जो सफेद पाउडर (चूर्ण) के रूप में पत्तियों को ढंक देते हैं। इसके कारण बाद में सभी पत्तियां गिर जाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए 2-3 किलोग्राम सल्फेक्स 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में बने घोल का चूर्ण पानी में घोल कर छिड़काव करें।

उकठा (फ्यूजेरियम विल्ट) : यह फफूंद से होने वाली बीमारी है। इससे पौधों की पत्तियां नीचे से ऊपर की ओर पीली पड़ने



साथ 1 सप्ताह के अंदर 3 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। बोआई से पहले बीजों को 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम या वीटावैक्स पावर से प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित कर लेना चाहिए।

रस्ट (गेरूई) : यह रोग फफूंद द्वारा फैलता है। यह नम स्थानों पर ज्यादा फैलता है। शुरू में पत्तियों की निचली सतह पर छोटे-छोटे गेरूई या पीले रंग के उड़े हुए धब्बे बनते हैं। धीरे-धीरे इन धब्बों का रंग भूरा लाल पड़ने लगता है। कई धब्बों के आपस में मिलने से पत्तियां सूख जाती हैं और उपज कम हो जाती है। इस रोग से बचाव के लिए सब से पहले रोगी पौधों को नष्ट कर देना चाहिए। उसके

लगती हैं और अंत में पूरा पौधा सूख जाता है। यह बीमारी गर्मी बढ़ने के कारण बढ़ने लगती है। इससे बचाव हेतु फसलचक्र को अपनाना चाहिए जिसमें ज्वार, बाजरा व गेहूं की फसलें शामिल हो सकती हैं। खेत में हरी खाद के

बाद हेक्साकोनाजोल की 1 मिली. मात्रा को 3 ली. पानी में घोल कर या विटेरेटीनाल की 1 ग्राम की मात्रा को 2 ली. पानी में घोल कर 1 से 2 बार छिड़काव करें।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

खेती को फायदेमंद बनाने का नायाब तरीका सीखें

नया प्राणवी जमीन से खेती करने के लिए नया प्राणवी मिल रही है जिससे आप अपने खेती के खर्च को घटा कर सकते हैं क्या आप खेती से निरास हो गए हैं और एक नया उपाय खोज रहे हैं जो आपको अधिक लाभ दे सके? यदि हाँ, तो हम आपको एक नया अवसर लेकर आए हैं। प्राणवी जमीन, खेती से खलना लक्ष्य-कार्यो को बनाई करने के लिए हमारे साथ जुड़ें। हम आपको जमीन के चयन से लेकर फसल लगाने, उत्पादन और उत्पादन के तक-निर्देश विषयों तक की पूरी गाइडेंस प्रदान करेंगे।

एक एकड़ जमीन में 800 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर और 800 कार्पी क्विंटल फसल की खेती कर के आप साल का लाखों रुपये कमा सकते हैं।



30 सालों में 7 बार देश का सर्वश्रेष्ठ किसान का अवार्ड प्राप्त करने वाले अनुभवी किसानों के साथ एक टिचानिर्देश।

देश का सर्वप्रथम सर्टिफाइड ऑर्गेनिक हर्बल फार्मस के साथ गांठ-रहित हर्बल समूह का समर्थन और संयुक्त विपणन।

कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मानों के साथ-साथ मिलेजिटर फार्म/रिसेट फार्म एंड इंडिया का अवार्ड भी दिया गया है।

गांठ-रहित हर्बल समूह के डॉक्टर राजाराम त्रिपाठी को।

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :
मुख्य कार्यालय: मां दंतेश्वरी हर्बल ग्रुप
151, हर्बल इस्टेट, कोडागांव बरतार (छत्तीसगढ़) 494226
प्रशासकीय कार्यालय : जी 14 हर्बल इस्टेट, एचआर टावर के बगल में, अशोक नगर (पुरानी अग्रवाल कॉलोनी) रिंग रोड-1, रायपुर (छत्तीसगढ़) - 492013
मो. : 9425265105
सूचना : कृपया कार्यालयीन दिवसों में सुबह 11:00 से 5:00 राख्य के बीच ही फोन करें।
फोन : 0771-2263433

● डॉ. देवीदास पटेल वैज्ञानिक (पादप प्रजनक)
कृषि विज्ञान केंद्र गोविन्दनगर, नर्मदापुरम (म.प्र.)

प्र देश में मुख्यतः तीन दशाओं में गेहूँ की खेती की जाती है (असिंचित एवं अर्धसिंचित, सिंचित एवं समय से बुआई एवं सिंचित एवं देर से बुआई) एवं तीनों परिस्थितियाँ वहाँ के वातावरण एवं स्थानीय स्रोतों पर निर्भर करती हैं। इस प्रकार गुणवत्ता युक्त गेहूँ की खेती से अधिकाधिक लाभ लेने के लिये उसकी उन्नत किस्मों एवं उत्पादन तकनीक की जानकारी अति आवश्यकता है।

गेहूँ की उत्पादकता बढ़ाने एवं खेती की लागत को कम करके, अधिक लाभांश लेने के लिए, गेहूँ की वैज्ञानिक तरीके से खेती करना होगा

जलवायु

गेहूँ की खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है, इसकी खेती के लिए अनुकूल तापमान बुवाई के समय 20-25 डिग्री सेंटीग्रेट उपयुक्त माना जाता है।

भूमि का चयन

गेहूँ सभी प्रकार की कृषि योग्य भूमियों में उगाया जा सकता है परन्तु दोमट से भारी दोमट, जलोढ़ मृदाओं में गेहूँ की खेती सफलतापूर्वक की जाती है। जल निकास की सुविधा होने पर मटियार दोमट तथा काली मिट्टी में भी इसकी अच्छी फसल ली जा सकती है। काली मृदा में गेहूँ की खेती के लिए सिंचाई की आवश्यकता कम पड़ती है। भूमि का पी. एच. मान 5 से 7.5 के बीच में होना फसल के लिए उपयुक्त रहता है क्योंकि अधिक क्षारीय या अम्लीय भूमि गेहूँ के लिए अनुपयुक्त होती है।

खेत की तैयारी

अच्छे अंकुरण के लिये एक बेहतर भुरभुरी मिट्टी की आवश्यकता होती है। समय पर जुताई खेत में नमी संरक्षण के लिए भी आवश्यक है। वास्तव में खेत की तैयारी करते समय हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि बोआई के समय खेत खरपतवार मुक्त हो, भूमि में पर्याप्त नमी हो तथा मिट्टी इतनी भुरभुरी हो जाये ताकि बुवाई आसानी से उचित गहराई तथा समान दूरी पर की जा सके। खरीफ की फसल की कटाई के तुरंत बाद ही एक गहरी जुताई कर जमीन को कुछ दिन खुली रहने दें यदि ठेले खड़े हो तो एक बार रोटोवेटर चला दे अथवा दो से तीन बार तवे वाले हेरो को चलाकर पाटा लगा दे यदि उपलब्ध हो तो 10 से 20 टन गोबर की सड़ी खाद या कंपोस्ट खाद अंतिम जुताई के समय खेत में मिला दे।

बीज का चयन, दर एवं बीजोपचार

बुवाई के लिए जो बीज इस्तेमाल किया जाता है वह रोग मुक्त, प्रमाणित तथा उन्नत किस्म का होना चाहिए। सिंचाई जल की उपलब्धता के अनुसार गेहूँ की किस्म का चयन करें भरोसेमंद संस्था से ही बीज खरीदें। बीज दर भूमि में नमी की मात्रा, बोने की विधि तथा किस्म पर निर्भर करती है। गेहूँ की बीज दर 100-125 किग्रा. प्रति हेक्टेयर है। असिंचित खेती के लिए 100 कि.ग्रा., सिंचित व समय पर बुवाई हेतु 100-110 कि.ग्रा. एवं सिंचित व देर से बुवाई हेतु 120-125 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। रोगों की रोकथाम के लिए बीज को बोने से पहले ट्राइकोडरमा की 4 ग्राम मात्रा को 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम के साथ प्रति किग्रा बीज की दर से बीज शोधन कर के ही बोनी करना चाहिए।

बुआई का समय एवं पौध अंतरण

सामान्य तौर पर गेहूँ की बुआई अक्टूबर से दिसंबर तक की जाती है। गेहूँ की शीघ्र बुवाई करने पर बालियाँ पहले निकल आती हैं जिससे उत्पादन कम होता है जबकि कम तापक्रम पर बुवाई करने पर अंकुरण देर से होता है। असिंचित अवस्था में गेहूँ की बुआई वर्षा ऋतु समाप्त होते ही मध्य अक्टूबर में कर देना चाहिए। अर्धसिंचित अवस्था में जहाँ पानी सिर्फ 2-3 सिंचाई के लिये ही उपलब्ध हो, वहाँ बोने का उपयुक्त समय 25 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक है। सिंचित गेहूँ बोने का उपयुक्त समय नवम्बर का प्रथम पखवाड़ा है। बोनी में 30 नवम्बर से अधिक देरी नहीं होना चाहिए। यदि किसी कारण से बोनी



उन्नत तरीके से करें गेहूँ की खेती

गेहूँ की नवीन उन्नत किस्म

किस्म	अवधि (दिन)	उपज (प्रति हे.)	विशेषताएँ
सिंचित (समय से)			
डी.बी.डब्ल्यू. 303	125-130	65-70	पौधे की औसत ऊंचाई 100-101 से.मी. होती है। यह भूरी एवं काली गेरुआ के लिए प्रतिरोधी किस्म है। इसके दाने सख्त व अम्बर कलर के होते हैं।
डी.बी.डब्ल्यू. 187	125-130	65-70	यह किस्म पीले रतुआ और गेहूँ विस्फोट रोग के लिए प्रतिरोधी है। उच्च गर्मी सहनशीलता है।
एच.आई. 1636	110-120	50-55	दाना अंबर, चमकदार, बालियाँ गरी हुई। अधिक पोषक तत्व एवं सभी प्रकार के गेरुआ के प्रति रोगरोधी किस्म है।
जी.डब्ल्यू. 322	115-120	60-62	दाना शरबती, चमकदार एवं चपाती के लिये उपयुक्त, तना एवं पीला गेरुआ के प्रति रोगरोधी किस्म है।
जी.डब्ल्यू. 366	116-120	51-52	पौधे की औसत ऊंचाई 91-95 से.मी. होती है। यह भूरी एवं काली गेरुआ के लिए प्रतिरोधी किस्म है। इसके दाने सख्त व अम्बर कलर के होते हैं। इसके 1000 दानों का औसत वजन 49 ग्राम होता है।
एच.आई. 1544	110-115	51.40	पौधे की औसत ऊंचाई 85-90 से.मी. होती है। इसके दाने अम्बर कलर एवं मध्य सख्त होते हैं। इसके 1000 दानों का औसत वजन 40-45 ग्राम होता है।
एच.आई. 8498	116-120	44	पौधे की औसत ऊंचाई 80-85 से.मी. होती है। यह गेरुआ के लिए प्रतिरोधी किस्म है। इसके 1000 दानों (मालवशक्ति) का औसत वजन 50 ग्राम होता है।
जे.डब्ल्यू. 1215	115-120	55-60	दाना अंबर, चमकदार, सभी बिमारियों की लिये सहनशील
सिंचित (देरी से)			
जे.डब्ल्यू. 1202	105-110	42-45	दाना आकर्षक, बड़े आकार का, चपाती के लिये उपयुक्त यह सभी रोगों के प्रति सहनशील है।
जे.डब्ल्यू. 1203	105-110	42-45	दाना आकर्षक, बड़े आकार का, चपाती के लिये उपयुक्त साथ ही साथ प्रोटीन का प्रचुर मात्रा, सभी रोगों के प्रति सहनशील है।
एच.डी. 2932		40-45	पौधे की औसत ऊंचाई 70-75 से.मी. होती है। इस किस्म में अधिक फुटान, गहरे हरे रंग की मोमरहित पत्तियाँ तथा मजबूत होता है। यह किस्म काली एवं भूरी गेरुआ प्रतिरोधी किस्म है। इसके 1000 दानों का औसत वजन 35-40 ग्राम होता है।
असिंचित या अर्धसिंचित			
एच.आई. 8823	115-120	40-45	अधिक पोषक तत्व एवं सभी प्रकार के गेरुआ के प्रति रोगरोधी किस्म है।
जे.डब्ल्यू. 3288	120-122	45-47	दाना लंबा चमकदार, आकर्षक, शरबती, मध्यम ऊंचाई, रोगों के प्रति सहनशील
जे.डब्ल्यू. 3269	115-120	42-45	सूखा एवं काला गेरुआ के प्रति सहनशील
एच.आई. 1531 (हर्षिता)	115-120	40-45	मध्यम ऊंचाई, दाना शरबती, मध्यम आकार का, रोगों के प्रति सहनशील
जे.डब्ल्यू. 3211	115-120	40-45	मध्यम ऊंचाई, दाना लंबा चमकदार, आकर्षक, शरबती, रोगों के प्रति सहनशील चपाती एवं गुणवत्ता में सुजाता के समान

विलंब से करनी हो तब देर से बोने वाली किस्मों की बोनी दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक हो जाना चाहिये। देर से बोई गई फसल को पकने से पहले ही सूखी और गर्म हवा का सामना करना पड़ जाता है जिससे दाने सिकुड़ जाते हैं तथा उपज कम हो जाती है। बुवाई के समय कतारों के बीच की दूरी 20-22 से.मी. एवं बीज की गहराई 3-5 से.मी. रखते हैं।

गेहूँ की बुआई पूर्व-पश्चिम में करने पर गेहूँ के पौधे सूर्य की रोशनी का उचित उपयोग प्रकाश संश्लेषण में कर लेते हैं, जिससे उपज अधिक मिलती है।

बुवाई की विधियाँ

आमतौर पर गेहूँ की बोआई चार विधियों से (छिटक कर, हल के पीछे कूड़ में, सीडड्रिल से या डिबलिंग) की जाती है। गेहूँ बोआई हेतु स्थान विशेष की परिस्थिति अनुसार विधियों प्रयोग में लाई जा सकती है। (शेष पृष्ठ 14 पर)

देवपुत्र
उत्कृष्ट प्रमाणित बीज
सिटी कम्पोस्ट • प्रॉम खाद
ऑर्गेनिक मेन्यूअर
वर्मी कम्पोस्ट

गंगा एवं जय जवान
NPK मिक्स फर्टिलाइजर

12:32:06
20:20:10
08:32:08
15:15:7%

रत्नम
सिंगल सुपर फॉस्फेट
(पायडर एवं दानेवार)
जिक सल्फेट 21%
मोनो जिक 33%

JYOTI
WEIGHING SYSTEMS PVT. LTD.

Our Products: • Pit Type Weighbridge
• Weighbridge Automation Software
• MS-WIM(Weigh In Motion)
• Pit Less Weighbridge
• Mobile Weighbridge
• Weight Indicator

305, उत्सव एवेन्यू, 12/5, उषागंज (नायरा कम्पाउण्ड)
ट्रेडर (म.प्र.) फोन: 0731-4064501, 4087471
मौ. 98272-47057, 98270-90267, 94251-01385

सभी सहकारी समितियों एवं विपणन संघ केंद्रों पर उपलब्ध

- डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख
- डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
- कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन
- डॉ. डी.के. पयासी, प्रजनक, क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, सागर

अलसी की खेती फायदा भरपूर देती

भा रत वर्ष में रबी मौसम में उगाई जाने वाली तिलहनी फसलों राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है। क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से भारत का स्थान विश्व में क्रमशः तृतीय व चतुर्थ है।



भारत में अलसी की खेती लगभग 3.84 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है तथा उत्पादन 1.54 लाख टन के साथ उत्पादकता 525 किग्रा प्रति हेक्टेयर है जो कि विश्व में कुल रकबे एवं उत्पादन का 10.81 एवं 5.31 प्रतिशत है। क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से मध्यप्रदेश का देश में प्रथम स्थान है। मध्यप्रदेश में अलसी की खेती 1.36 लाख हेक्टेयर में की जाती है, जिसमें 67,000 टन उत्पादन है, जबकि उत्पादकता 504 किग्रा प्रति हेक्टेयर है।

मध्यप्रदेश में अलसी उत्पादक जिले बालाघाट, रीवा, सागर, दमोह, सिवनी, सीधी, सतना, छतरपुर, रायसेन, पन्ना, मण्डला आदि हैं। अलसी के तेल के उत्पादन का 20 प्रतिशत भाग घरों में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है एवं 80 प्रतिशत भाग औद्योगिक संस्थानों में पेन्ट, वार्निश, लिनोनियम, लिखने तथा छपाई की स्याही बनाने में किया जाता है। नीचे बताये गये उत्पादन तकनीक को किसान भाई अपनाकर इसकी उपज को तीन गुना बना सकते हैं।

जलवायु : अलसी की फसल को ठंडे व शुष्क मौसम की आवश्यकता होती है। इसके उचित अंकुरण के लिये 25-30 सेल्सियस सेंटीग्रेट तथा बीज बनते समय 15-20 सेल्सियस सेंटीग्रेट तापमान होना चाहिये।

भूमि एवं भूमि की तैयारी : अलसी की फसल के लिये काली, भारी एवं दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है। धान के भारी खेत जिसमें नमी अधिक समय तक संचित रहती है वहां भी उत्तेरा पद्धति से अलसी की खेती की जा सकती है। अलसी के अच्छे अंकुरण के लिये खेत को अच्छा भुरभुरा

तैयार करना चाहिये। खेत को 2-3 बार आड़ी एवं खड़ी जुताई करके उसमें पाटा लगाकर नमी को संरक्षित करना चाहिये। धान के खेतों में समय-समय पर खरपतवार निकालकर खेत को नींदा रहित करते हुये साफ रखना चाहिये।

फसल प्रणाली : अलसी को मुख्य फसल के रूप में उगाने से मिलवा या अन्तरवर्तीय फसल की अपेक्षा अधिक आय होती है। अन्तरवर्तीय फसल पद्धति के अन्तर्गत अलसी के साथ 3:1 के अनुपात में चने, सरसों, मसूर को भी लगाकर अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

बीज की गहराई : अलसी के बीज को नमी के आधार पर भूमि में 3 से.मी. की गहराई पर बुवाई करें। यदि भूमि में पर्याप्त नमी न हो तो उथली बुवाई लाभदायक होती है।

खाद एवं उर्वरक : रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बुवाई के समय ही करें। गोबर की खाद उपलब्ध होने पर अंतिम बखरनी के समय 4-5 टन प्रति हेक्टेयर खेत में मिला दें। असिंचित अवस्था में 30:15:0 किलोग्राम नत्रजन, स्फुर व पोटाश प्रति हेक्टेयर सम्पूर्ण खाद बुवाई के समय में ही खेत में डालें। सिंचित अवस्था में 70:30:0 किलोग्राम नत्रजन, स्फुर, पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें। नत्रजन की 2/3 मात्रा व स्फुर, पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय दें तथा नत्रजन की शेष 1/3 मात्रा को पहली सिंचाई के समय दें एवं उत्तेरा पद्धति में 20 किलो नत्रजन अलसी की फसल में दें।

खरपतवार नियंत्रण : अलसी की फसल को बुवाई से 30-35 दिन तक खरपवारों से मुक्त रखना चाहिये।

फसलों को नींदा रहित रखने के लिये बुवाई के 15-20 दिन बाद पहली निंदाई-गुड़ाई करनी चाहिये या रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के अन्तर्गत पेन्डामिथलीन खरपतवारनाशक की 3.33 लीटर मात्रा को 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर अलसी के बीज के अंकुरण पूर्व उपयोग करें। प्रभावी नींदा नियंत्रण हेतु मेटसल्फ्यूरॉन मिथाईल 4 ग्राम ए.आई. के साथ क्लोडिनोफॉप 600 ग्राम प्रति 1.25 हेक्टेयर रकबे में 18-20 दिन की फसल में प्रयोग करें।

सिंचाई : अलसी की फसल में सिंचाई करने से उत्पादन में वृद्धि होती है अतः सिंचाई उपलब्ध होने पर पहली सिंचाई शाखा बनते समय (35 से 40 दिन) व दूसरी सिंचाई (65 से 70 दिन) कली बनने की अवस्था में करने से उत्पादन में वृद्धि होती है।

उन्नत किस्में			
उन्नत प्रजाति (किग्रा/हे.)	अनुमोदित वर्ष विशेष गुणधर्म	उपज	
जवाहर अलसी- 67	201	1250-1300	सफेद फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 73	2011	1050-1100	नीला फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 41	2013	1600-1700	सफेद फूल, सिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 79	2016	1750-1800	नीला फूल, सिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 66	2018	1200-1400	नीला फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 95	2018	1085-1200	सफेद फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
आर.सी.एल.-148	2018	1300-1400	नीला फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 93	2019	1050-1150	सफेद फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त

बीजोपचार : अलसी के बीज को मुदा जनित रोग से बचाव हेतु थारयम या कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करे व बीजोपचार के पश्चात राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर से 5-5 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर बुवाई करें।

बीज दर बुवाई का समय व तरीका			
दशा	बीजदर कि.ग्रा./हेक्टेयर	बोने का समय	पौधे की दूरी
असिंचित अवस्था	30	अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से द्वितीय सप्ताह	25 से.मी.
सिंचित अवस्था	20	अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह	25 से.मी.
उत्तेरा पद्धति	35	अक्टूबर के दूसरे से तीसरे सप्ताह तक	छिटक कर

रोग व कीट नियंत्रण	
रोग	नियंत्रण
रतुआ रोग	कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) या डाएथेन एम.-45 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
चूर्णी फफूंदी रोग	घुलनशील गंधक (0.3 प्रतिशत) व कैराथिन (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
आल्टरनेरिया अंगमारी	थायरम 3 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचारित कर बुवाई करें। डाएथेन एम.-45 का 0.25 प्रतिशत का छिड़काव करें।
अलसी बड फ्लार्ड	फास्फोमिडान 1.25 लीटर/हेक्टेयर का छिड़काव करें।

फसल की कटाई एवं गहाई : जब पौधों की पत्तियां सूख जायें, बोडियां भूरी पड़ जायें व दाने चमकीले हो जायें तब फसल की कटाई कर लेना चाहिये एवं बीज का सुरक्षित भण्डारण करें।





सहकार से समृद्धि

कृभको उत्पाद की पहचान, भरपुर फसल खुशहाल किसान




कृषक भारती को-ऑपरेटिव लिमिटेड, म.प्र.

- मंजू शुक्ला
 - राजेश सिंह
 - अखिलेश कुमार
 - अजय कुमार पांडे
- कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)

उन्नत तरीके से करें लहसुन की खेती



लहसुन में गंधक युक्त यौगिक एलाएल प्रोपाइल डाईसल्फाइड तथा एलिन नामक अमीनो अम्ल पाये जाते हैं। सामान्य दशा में एलिन रंगहीन, गंधहीन तथा जल में घुलनशील होता है परन्तु जब लहसुन काटा, छीला तथा कुचला जाता है तो इसमें उपस्थित एलीनेज एन्जाइम सक्रिय हो जाते हैं तथा एलिन को एलिसिन में बदल देते हैं। इसी परिवर्तन के कारण इसमें से विशिष्ट, तेज गंध आने लगती है।

जीवाणुओं के विरुद्ध सक्रियता भी इसी एलिसिन नामक पदार्थ के कारण होती है। लहसुन का उपयोग सम्पूर्ण विश्व में मसालों या विभिन्न दवाइयों के रूप में होता है। ताजे लहसुन में खाद्य पदार्थ जैसे कार्बोहाइड्रेड 62.8 प्रतिशत, प्रोटीन 63.3 प्रतिशत, लवण 1 प्रतिशत, रेशे 0.8 प्रतिशत इसके अतिरिक्त कैल्शियम, फॉस्फोरस, लोहा आदि तत्व पाये जाते हैं साथ ही विटामिन ए, बी, निर्यामिन, निकोटिनिक अम्ल भी पाये जाते हैं। लहसुन में विभिन्न औषधीय गुण पाए जाते हैं जिसके कारण यह प्राचीन काल से अत्यन्त उपयोगी मसाले की फसल है। लहसुन का प्रयोग अचार, चटनी, केचअप आदि संसाधित पदार्थों को बनाने में किया जाता है।

लहसुन के औषधीय गुण: लहसुन एक चमत्कारी पौधा है जिसका प्रयोग वर्षों से औषधि के रूप में किया जा रहा है। इसमें प्रबल मात्रा में सल्फर पाया जाता है, जिसके कारण इसमें तीखापन होता।

लहसुन के गुण एवं उपयोग: लहसुन एंटी-ऑक्सीडेंट, एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-फंगल और एंटी-वायरल गुणों से भरपूर होता है। इसमें एलीसीन, एलीन और सल्फर जैसे यौगिक मौजूद होते हैं जो लहसुन को और ज्यादा असरदार औषधि बना देते।

भूमि एवं जलवायु: लहसुन की खेती किसी भी प्रकार की भूमि में की जा सकती है परन्तु इसके लिए जीवाश्म युक्त उपजाऊ व जल निकास युक्त बलुई दोमट और दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। भारी, चिकनी मिट्टी में कंद का आकार छोटा व खुदाई में कठिनाई होती है। यह पाला व लवणीयता को भी कुछ स्तर तक सहन कर सकती है। लहसुन की वृद्धि के समय ठण्डा व नम जलवायु तथा कन्द परिपक्वता के समय शुष्क जलवायु उपयुक्त रहती है। ठंडी जलवायु का पौधा होने के कारण इसकी खेती फलदार बगीचों में भी की जा सकती है। अधिक तापमान व नमी में कलियों के सड़ने की संभावना रहती है तथा अंकुरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसकी अच्छी उपज के लिए 29-35 सेन्टीग्रेट तापमान की आवश्यकता होती है।

भूमि की तैयारी: लहसुन की खेती के लिए गहरी जुताई तथा इसके बाद हरे से भूमि की जुताई करना उपयुक्त रहता है। जिससे मिट्टी भुरभुरी हो जाती है। इसके बाद खरपतवार निकालकर खेत को समतल कर लेते हैं।

उन्नतशीन प्रजातियां

जामनगर सफेद: इस किस्म के कंदों में कलियाँ, आकार में बड़ी तथा संख्या में 20-25 तक होती हैं एवं कंदों का व्यास 3.5 से 4.5 सेमी तक होता है। इसकी उपज 130 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त होती है। इसकी संस्तुति रबी मौसम में ऐसे क्षेत्रों के लिए की जाती है, जहां पर्ल ब्लाच या अंगमारी की बीमारी नहीं आती है।

यमुना सफेद (जी-1): इस किस्म के कंद रंग सफेद, चमकदार एवं घने होते हैं। प्राप्त कंदों का व्यास 4.0 से 4.5 से.मी. होता है। अधिकतर कीटों-रोगों के प्रति इस किस्म में निरोधकता पाई जाती है। इस किस्म से 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

यमुना सफेद 2 (जी-50): यह किस्म देश के उत्तरी प्रांतों के लिए उपयुक्त है। कंदों का व्यास 3.5 से 4.0 से.मी. होता है। इसकी औसत पैदावार 150 से 200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

जी-282: यह देश के उत्तरी एवं मध्य भाग के लिए अनुमोदित की गई किस्म है। अन्य की अपेक्षा इसकी पत्तियां अधिक चौड़ी, कंद तथा कलिया बड़े आकार की होती हैं। इसके कंदों का व्यास 5.0 से 6.0 सेमी होता है। इसकी औसत

पैदावार 175 से 200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म निर्यात के लिए उपयुक्त पाई गई है।

एग्रीफाण्ड पार्वती (जी-313): यह किस्म उन स्थानों के लिए उपयुक्त है जहां दिन लम्बे होते हैं। इसलिए यह उत्तरी भारत में मध्यम व ऊँचे स्थानों के लिए उपयुक्त है। इसके कंद आकार में बड़े एवं कंद का व्यास 5.0 से 6.0 सेमी होता है। यह किस्म 175 से 225 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज दे सकती है।

पंत लोहिया: यह अधिक उपज देने वाली किस्म पर्पल ब्लाच (बैंगनी धब्बा) रोग के प्रति अवरोधी है। परिपक्वता अवधि 175 दिन तथा उपज 120-130 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

रोपाई का समय व बीज की मात्रा

लहसुन की बुवाई अक्टूबर माह में की जाती है। बुवाई के समय इसके लिए कतार से कतार की दूरी 15 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 7 सेमी रखनी चाहिए। बुवाई के लिए गांठों से जुड़े हुए जवा का प्रयोग किया जाता है। एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 5-6 क्विंटल जवा की आवश्यकता होती है लेकिन मशीन द्वारा बुवाई करने पर इसकी मात्रा 6-7 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

खाद एवं उर्वरक

खाद एवं उर्वरक की मात्रा मृदा परीक्षण कराने के बाद आवश्यकतानुसार करना चाहिए। सामान्यतः लहसुन की खेती की तैयारी के समय 25 से 30 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में मिलाकर जुताई करना चाहिए। कलिया लगाने से पहले 50 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस, 100 किग्रा पोटाश तथा 25 किग्रा जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई

से पूर्व आवश्यकता होती है। बुवाई के एक महीने बाद 50 किग्रा नाइट्रोजन खड़ी फसल में छिड़कना लाभकारी होता है। लहसुन की बुवाई के 55-60 दिन के बाद किसी भी प्रकार के रासायनिक उर्वरक का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण व निराई-गुड़ाई

लहसुन में खरपतवार नियंत्रण हेतु पेंडीमेथिलीन 3 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के 1-2 दिन के अन्दर प्रयोग कर सकते हैं। अंकुरण पूर्व प्रयोग करने से खरपतवार नियंत्रण अच्छा होता है तथा उपज भी अच्छी प्राप्त होती है। लहसुन की खेती से अच्छी पैदावार के लिए 3-4 बार निराई-गुड़ाई अवश्य करें। जिससे कंद को हवा मिले एवं जड़ों का विकास हो। एक माह बाद सिंचाई के तुरंत बाद डंडे या रस्सी से पौधों को हिलाने से कंद का विकास अच्छा होता है। (शेष पृष्ठ 15 पर)

Where Quality Begins...

एच.डी.पी.ई., यू.पी.वी.सी. पाईप्स एवं एच.डी.पी.ई. फव्वारा सिंचाई प्रणाली (स्प्रिंकलर सिस्टम)

- क्लासिक एच.डी.पी.ई., यू.पी.वी.सी. पाईप्स एवं एच.डी.पी.ई. फव्वारा सिंचाई प्रणाली उच्च गुणवत्ता से निर्मित।
- ऊंची-नीची जगहों पर भी आसानी से उपयोग लायक।

क्लासिक
सालों साल बेमिसाल

निर्माता- सिद्धार्थ पाईप्स एण्ड फिटिंग्स

प्लॉट नं. 233, फेज-2, वितकोनी औद्योगिक क्षेत्र, वितकोनी, जिला-महासमुंद (छ.ग.) 493446
 ☎ +91 98261-26813, 98261-50865 ✉ siddharthpipes@rediffmail.com

☎ क्षेत्रीय कार्यालय: कटंगी बाईपास, शिवशक्ति मेडिन गार्डन के सामने, जबलपुर (म.प्र.) ☎ 8425608813

ओपाल, इंदौर एवं उज्जैन संभाग के लिए वितरक की आवश्यकता है।

खेती का उत्पादन बढ़ाकर कृषकों को समृद्ध करने के लिए इफको नैनो उर्वरकों की वृहद श्रृंखला

इफको का है वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा

नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी
की खरीद पर प्रति वोटल
₹. 10000/-
का आकर्षक
दुर्घटना बीमा मुफ्त*

नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी
का उपयोग करने से
पारंपरिक उर्वरकों
की मात्रा में **कमी**
की जा सकती है

नैनो उर्वरकों के प्रयोग का किसानों का अपना अनुभव/कृषि विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के परीक्षणों की रिपोर्ट प्रकाशित लेख एवं क्षेत्र परीक्षण (ट्रायल) के परिणाम से संबंधित जानकारी के लिए QR Code स्कैन करें।

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड राज्य कार्यालय- ब्लॉक 2, तृतीय तल, पर्यावास भवन अरेरा हिल्स, भोपाल (म.प्र.)
 अधिक जानकारी हेतु : www.nanourea.in - www.nanodap.in फोन नं. 1800 103 1867

(पृष्ठ 11 का शेष) गेहूं की खेती.....

छिटकवाँ विधि: इस विधि में बीज को हाथ से समान रूप से खेत में छिटक दिया जाता है और पाटा अथवा देशी हल चलाकर बीज को मिट्टी से ढक दिया जाता है। इस विधि से गेहूं उन स्थानों पर बोया जाता है, जहाँ अधिक वर्षा होने या मिट्टी भारी दोमट होने से नमी अपेक्षाकृत अधिक समय तक बनी रहती है। इस विधि से बोये गये गेहूं का अंकुरण ठीक से नहीं हो पाता, पौधे अव्यवस्थित ढंग से उगते हैं, बीज अधिक मात्रा में लगता है एवं निराई-गुड़ाई में असुविधा होती है।

सीडड्रिल द्वारा बुवाई: विस्तृत क्षेत्र में बुवाई करने के लिये यह एक आसान विधि है। इसमें बुवाई बैल चलित या ट्रैक्टर चलित सीडड्रिल यंत्र द्वारा की जाती है। इस मशीन में पौध अन्तरण व बीज दर का समायोजन इच्छानुसार किया जा सकता है। इस विधि से बीज भी कम लगता है और बुवाई निश्चित दूरी तथा गहराई पर सम रूप से हो पाती है जिससे अंकुरण अच्छा होता है। इस विधि से बोने में समय कम लगता है।

डिबलर द्वारा बोआई: इस विधि में प्रत्येक बीज को मिट्टी में छेदकर निर्दिष्ट स्थान पर मन चाही गहराई पर बोते हैं। इसमें एक लकड़ी का फ्रेम को खेत में रखकर दबाया जाता है। इसमें लगी हुई खूंटियों से भूमि में छेद हो जाते हैं जिनमें 1-2 बीज प्रति छेद की दर से डालते हैं। इस विधि से बीज की मात्रा काफी कम (25-30 किग्रा. प्रति हेक्टेयर) लगती है परन्तु समय व श्रम अधिक लगने के कारण उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

शून्य कर्षण सीडड्रिल विधि: धान की कटाई के उपरांत किसानों को गेहूं फसल के लिए खेत तैयार करना पड़ता है। इसमें लागत भी अधिक आती है। ऐसे में किसानों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता। शून्य कर्षण से किसानों का समय तो बचता ही है, साथ ही लागत भी कम आती है, जिससे किसानों का लाभ काफी बढ़ जाता है। इस विधि के माध्यम से खेत की जुताई और बुवाई दोनों ही काम एक साथ हो जाते हैं। इससे बीज भी कम लगता है और पैदावार करीब 15 प्रतिशत बढ़ जाती है। खेत की तैयारी में लगने वाले श्रम व सिंचाई के रूप में भी करीब 15 प्रतिशत बचत होती है। इसके अलावा खरपतवार प्रकोप भी कम होता है, जिससे खरपतवारनाशकों का खर्च भी कम हो जाता है। समय से बुआई होने से पैदावार भी अच्छी होती है।

खरपतवार नियंत्रण : गेहूं के साथ अनेक प्रकार के खरपतवार भी खेत में उगकर पोषक तत्वों, प्रकाश, नमी आदि के लिए फसल के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। यदि इन पर नियंत्रण नहीं किया गया तो गेहूं की उपज में 10-40 प्रतिशत तक हानि संभावित है। बोआई से 30-40 दिन तक का समय खरपतवार प्रतिस्पर्धा के लिए अधिक क्रांतिक रहता है। गेहूं के खेत में चौड़ी पत्ती वाले और घास कुल के खरपतवारों का प्रकोप होता है।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: कृष्णनील, बथुआ, हिरनखुरी, सैंजी, चटरी-मटरी, जंगली गाजर आदि के नियंत्रण हेतु 2,4-डी इथाइल ईस्टर 36 प्रतिशत की 1.4 लीटर मात्रा को 700-800 लीटर पानी में घोलकर एक हेक्टेयर में बोनी के 18-20 दिन के अन्दर छिड़काव करना चाहिए।

संकरी पत्ती वाले खरपतवार: गेहूं में जंगली जई व गेहूँसा का प्रकोप अधिक देखा जा रहा है। इनके नियंत्रण के लिए पेन्डीमिथिलिन 30 ईसी (स्टाम्प) 1 लीटर प्रति हेक्टेयर अथवा आइसोप्रोट्यूरॉन 50 डब्ल्यू.पी. 1.5 किग्रा. प्रति हेक्टेयर को बुवाई के 2-3 दिन बाद 700-800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें। खड़ी फसल में बोआई के 20-25 दिन बाद मेटाक्सुरान की 1.5 कि.ग्रा. मात्रा को 700 से 800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर छिड़कना चाहिए। मिश्रित खरपतवार की समस्या होने पर आइसोप्रोट्यूरॉन 800 ग्रा. और 2,4-डी 0.4 लीटर प्रति हे. को मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

सिंचाई: आमतौर पर गेहूं से अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए हल्की भूमि में गेहूं की सिंचाई निम्न अवस्थाओं में करनी चाहिए। इन अवस्थाओं पर जल की कमी का उपज पर भारी कुप्रभाव पड़ता है, परन्तु गेहूं की सिंचाई हल्की करें।

सिंचाई	अवस्था	समय (बुआई के बाद) दिन
पहली सिंचाई	क्राउन रूट (ताजमूल अवस्था)	20 से 25
दूसरी सिंचाई	कल्ले निकलते समय	40 से 45
तीसरी सिंचाई	दीर्घ सन्धि अथवा गांठे बनते समय	60 से 65
चौथी सिंचाई	पुष्पावस्था	80 से 85
पांचवी सिंचाई	दुग्धावस्था	100 से 105
छठी सिंचाई	दाना भरते समय	115 से 120

दोमट या भारी दोमट भूमि में निम्न चार सिंचाइयां करके भी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है, परन्तु प्रत्येक सिंचाई कुछ गहरी 8 सें.मी. करें।

सिंचाई	अवस्था	समय (बुआई के बाद) दिन
पहली सिंचाई	क्राउन रूट (ताजमूल अवस्था)	20 से 25
दूसरी सिंचाई	कल्ले निकलते समय	45 से 40
तीसरी सिंचाई	दीर्घ सन्धि अथवा गांठे बनते समय	70 से 80
चौथी सिंचाई	पुष्पावस्था	95 से 110

सीमित गेहूं की सिंचाई साधन की दशा में

यदि आपके पास तीन गेहूं की सिंचाई की सुविधा ही उपलब्ध हो तो ताजमूल अवस्था और बाली निकलने के पूर्व तथा दुग्धावस्था पर करें। यदि सिंचाई के लिए दो ही सिंचाइयां उपलब्ध हों तो ताजमूल और पुष्पावस्था पर करें। यदि एक ही सिंचाई उपलब्ध हो तो ताजमूल अवस्था पर करें।

गेहूं की सिंचाई में निम्नलिखित तीन बातों पर ध्यान दें-

- ★ गेहूं बुआई से पहले खेत भली-भांति समतल करें और किसी एक दिशा में हल्का ढाल दें, जिससे जल का पूरे खेत में एक साथ वितरण हो सके।
- ★ गेहूं की बुआई के बाद खेत को मिट्टी और सिंचाई के साधन के अनुसार आवश्यक माप की क्यारियों या पट्टियों में बांट दें, इससे जल के एक साथ वितरण में सहायता मिलती है।
- ★ हल्की भूमि में विश्वसनीय सिंचाई सुविधा होने पर सिंचाई हल्की लगभग 6 सेंटीमीटर करें और दोमट एवं भारी भूमि में और सिंचाई साधन की दशा में सिंचाई कुछ गहरी यानि प्रति सिंचाई लगभग 8 सेंटीमीटर करें।

उर्वरकों का प्रयोग : उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना चाहिए, गेहूं की अच्छी उपज के लिए खरीफ की फसल के बाद भूमि में 150 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस, तथा 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर तथा देर से बुवाई करने पर 80 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस, तथा 40 कि.ग्रा. पोटाश, अच्छी उपज के लिए 60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए। गोबर की खाद एवं आधी नत्रजन की मात्रा तथा पोटाश की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय आखिरी जुताई में या बुवाई के समय खाद का प्रयोग करना चाहिए। शेष नत्रजन की आधी मात्रा पहली सिंचाई पर तथा बची शेष मात्रा दूसरी सिंचाई पर प्रयोग करनी चाहिए। गेहूं की खेती के लिए 3 साल के अंतराल पर 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट बुवाई से पहले करना चाहिए।

कीट और उनका प्रबंध : गेहूं की फसल में शुरू में दीमक कीट बहुत ही नुकसान पहुंचता है। इसकी रोकथाम के लिए दीमक प्रकोपित क्षेत्र में नीम की खली 10 क्विंटल/ हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी के समय प्रयोग करना चाहिए तथा पूर्व में बोई गई फसल के अवशेष को नष्ट करना अति आवश्यक है। इसके साथ ही माहू भी गेहूं की फसल में लगती है, ये पत्तियों तथा बालियों का रस चूसते हैं, ये पंखहीन तथा पंखयुक्त हरे रंग के होते हैं, सैनिक कीट भी लगता है पूर्ण विकसित सुंडी लगभग 40 मि.मी. लम्बी बादामी रंग की होती है। यह पत्तियों को खाकर हानि पहुंचाती है। इसके साथ-साथ गुलाबी तना बेधक कीट लगता है। ये सुंडी भूरे गुलाबी रंग की लगभग 5 मिली मीटर की लम्बी होती है, इसके काटने से फल की वानस्पतिक बढ़वार रुक जाती है। इन सभी कीट की रोकथाम के लिए कीटनाशी जैसे क्यूनालफास 25 ई.सी. की 1.5-2.0 ली. मात्रा 700-800 ली. पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए या सैपरमैथ्रिन 750 मी.ली. या फेवलेरेट 1 ली. 700-800 ली. पानी में घोलकर प्रति हेक्टे. की दर से छिड़काव करना चाहिए। कीटों के साथ साथ चूहे भी लगते हैं, ये खड़ी फसल में नुकसान पहुंचाते हैं। चूहों के लिए जिंक फास्फाइड या बेरियम कार्बोनेट के बने जहरीले चारे का प्रयोग करना चाहिए, इसमें जहरीला चारा बनाने के लिए 1 भाग दवा, 1 भाग सरसों का तेल तथा 48 भाग दाना मिलाकर बनाया जाता है जो कि खेत में रखकर प्रयोग करते हैं।

कटाई : जब गेहूं के दाने पक कर सख्त हो जाय और उनमें नमी का अंश 18-20 प्रतिशत तक आ जाये, फसल की कटाई करनी चाहिये। कटाई में देरी करने से दाने झड़ने लगते हैं और पक्षियों द्वारा नुकसान होने की संभावना रहती है। कटाई के पश्चात् फसल को 2-3 दिन खलिहान में सुखाकर मड़ाई शक्ति चालित थ्रेशर से की जाती है। कम्बाइन हारवेस्टर का प्रयोग करने से कटाई, मड़ाई तथा ओसाई एक साथ हो जाती है परन्तु कम्बाइन हारवेस्टर से कटाई करने के लिए, दानों में 20 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि दानों में ज्यादा नमी रहने पर मड़ाई या गहाई ठीक से नहीं होगी।

उपज: उन्नत सस्य तकनीक से खेती करने पर सिंचित अवस्था में गेहूं की उन्नत किस्मों से लगभग 50-60 क्विंटल दाना के अलावा 80-90 क्विंटल भूसा प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है। जबकि देशी किस्मों से इसकी लगभग आधी उपज प्राप्त होती है।

भंडारण: सुरक्षित भंडारण हेतु दानों में 10-12 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं होना चाहिए। भंडारण के पूर्ण कुठिया तथा कमरों को साफ कर लें।

(पृष्ठ 10 का शेष)

मटर की खेती...

एंथ्रेक्नोज : यह भी एक बीज जनित बीमारी है। इस बीमारी में पत्तियों के ऊपर पीले रंग से काले रंग के सिकुड़े हुए धब्बे बन जाते हैं। छोटे फलों पर काले रंग के धब्बे बन जाते हैं और रोगी फलियां सिकुड़ कर मर जाती हैं। यह बीमारी बीजों के जरिए एक मौसम से दूसरे मौसम में जाती है। इससे बचाव के लिए बोआई से पहले बीजों को 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। रोगरोधी किस्मों का प्रयोग करना चाहिए। फूल आने के बाद 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम या थायोफिनेट मिथाइल का 1 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

बैक्टेरियल ब्लाइट : यह एक बीज जनित बीमारी है, जो नमी वाले वातावरण में ज्यादा फैलती है। इस रोग में डंठल के नीचे की पत्तियों व तनों पर एक पनीला धब्बा बन जाता है। सफेद रंग का स्त्राव भी दिखाता है। धीरे-धीरे प्रभावित हिस्सा भूरा होने लगता है। इससे बचाव के लिए रोग रहित बीज का इस्तेमाल करना चाहिए और बीजशोधन भी कर लेना चाहिए। फसल प्रभावित होने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.3 ग्राम प्रति लीटर पानी का छिड़काव फायदेमंद होता है।

कीट प्रबंधन - माहू : इस कीड़े का प्रकोप जनवरी के महीने में ज्यादा होता है। यह कीड़ा पत्तियों और कोमल टहनियों का रस चूसता है। इससे बचाव के लिए मैलाथियान 50 ईसी कीटनाशक दवा की 1.5 मिली. मात्रा या एसिटामाप्रिड 20 एसपी को 1 ली. पानी में घोलकर 10-10 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।

लीफमाइनर (पत्ती में सुरंग बनाने वाला कीट) : यह कीट पौधों की पत्तियों में सफेद धागे की तरह बारीक सुरंग बनाता है। इसके प्रकोप से पत्तियां सूख जाती है। बचाव के लिए सुरंग बनाने वाले कीड़ों से प्रभावित पत्तियों को सुंडी व कृमिकोष सहित तोड़कर जमीन में कहीं दूर गाड़ देना चाहिए। साथ ही नीम आधारित उत्पाद एनएसकेई 5 प्रतिशत (50 ग्राम प्रति लीटर) का छिड़काव कर सकते हैं।

फलीछेदक : यह कीट फलियों में छेद करके दानों को खाता रहता है। इस कीड़े के असर वाली फलियां रंगहीन, पानीयुक्त व दुर्गन्धयुक्त हो जाती हैं। इससे बचाव के लिए थायोडिकार्व 75 डब्ल्यू.पी. (1 ग्राम/ली.) या क्लोरान्त्रनीलीप्रोल 18-5 एससी 0.3 मिली लीटर मात्रा का 1 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

तोड़ाई : मटर की फसल से ज्यादा आमदनी लेने के लिए समय से तोड़ाई करना जरूरी होता है। मटर की तोड़ाई हाथ से की जाती है। तोड़ाई के समय पौधों को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए। फलियां भरी हुई व मुलायम ही तोड़नी चाहिए। तोड़ाई सुबह या शाम को करें। 10 दिनों के अन्तर पर 3-4 बार तोड़ाई करनी चाहिए।

बीज हेतु भण्डारण : भण्डारण में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए। ● बीजों में नमी की मात्रा 9 फीसदी से कम होनी चाहिए। ज्यादातर कीट इतनी कम नमी में प्रजनन नहीं कर पाते। ● नए बीजों को रखने से पहले अच्छी तरह साफकरके कीटनाशी द्वारा कीट रहित कर लेना चाहिए।

- रंजीत सिंह राघव, वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान)
- डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)



डीएपी से मुख्य रूप से नाइट्रोजन व फॉस्फोरस की पूर्ति होती है। जबकि एन.पी.के.

मध्यप्रदेश में रबी मौसम में मुख्यतः गेहूँ, मटर, चना, मसूर, सरसों, अलसी, तिवड़ा इत्यादि फसलों की खेती की जाती है। धान-गेहूँ खाद्यान्न फसलों की उत्पादकता प्रति हेक्टेयर अधिक होने के कारण उसमें उर्वरक डी.ए.पी., एम.ओ.पी., यूरिया की आवश्यकता अधिक होती है। जबकि दलहनी व तिलहनी फसलों चना, मसूर, सरसों व अलसी में उर्वरक की आवश्यकता कम होती है।

डीएपी के विकल्प के रूप में करें एन.पी.के. खाद का उपयोग

जैसे उर्वरकों से नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व (12:32:16, 20:20:0:13, 14:35:14, पोटेसियम तीनों तत्वों की पूर्ति होती है जो कि 16:16:16, 10:26:26) निम्न समूहों में से पौधे के लिए लाभदायक हैं, अतः किसान भाई किसी एक समूह का चयन करके रबी फसलों डीएपी के विकल्प के रूप में एन.पी.के. की बुवाई करें।

प्रथम विकल्प- यूरिया, सिंगल सुपर फॉस्फेट, म्यूरेट ऑफ पोटाश। **द्वितीय विकल्प-** डीएपी, यूरिया, म्यूरेट ऑफ पोटाश। **तृतीय विकल्प-** एन.पी.के. 12:32:16, यूरिया, म्यूरेट ऑफ पोटाश। **चतुर्थ विकल्प-** एन.पी.के. 20:20:0:13, यूरिया, म्यूरेट ऑफ पोटाश। **पंचम विकल्प-** एन.पी.के. 10:26:26, यूरिया। **षष्ठम विकल्प-** एन.पी.के. 16:16:16, यूरिया।

फसल एवं उर्वरक

फसल एवं उर्वरक N:P:K kg/ha	समूह-1 (मात्रा किग्रा/हे.)		समूह-2 (मात्रा किग्रा/हे.)				समूह-3 (मात्रा किग्रा/हे.)		
	Urea	S.S.P.	M.O.P.	D.A.P.	Urea	M.O.P.	NPK (12:32:16)	Urea	M.O.P.
गेहूँ असिंचित (40:20:10)	87	125	17	43	70	17	63	71	-
गेहूँ अर्द्धसिंचित (60:40:20)	130	250	33	87	96	33	125	98	-
गेहूँ सिंचित (120:60:40)	260	375	67	130	210	67	188	212	16
गेहूँ सिंचित (140:70:40)	304	438	67	152	244	67	219	247	8
गेहूँ सिंचित देरी से (80:40:30)	174	250	50	87	140	50	125	141	16
चना व मसूर असिंचित (20:40:20)	43	250	33	87	9	33	125	11	-
चना व मसूर सिंचित (20:60:20)	43	375	33	130	-	33	188	-	-
सरसों (60:30:20)	130	188	33	65	105	33	94	106	8

अधिक उपज वाली किस्में

फसल एवं उर्वरक N:P:K (kg/ha)	समूह-4 (मात्रा किग्रा/हे.)			समूह-5 (मात्रा किग्रा/हे.)		समूह-6 (मात्रा किग्रा/हे.)	
	Urea	NPK (20:20:0:13)	M.O.P.	NPK (10:26:26)	Urea	Urea	NPK (16:16:16)
गेहूँ असिंचित (40:20:10)	43	100	17	77	70	43	125
गेहूँ अर्द्धसिंचित (60:40:20)	43	200	33	154	97	43	250
गेहूँ सिंचित (120:60:40)	130	300	67	230	210	130	375
गेहूँ सिंचित (140:70:40)	152	350	67	269	245	152	438
गेहूँ सिंचित देरी से (80:40:30)	87	200	50	154	140	87	250
चना व मसूर असिंचित (20:40:20)	0	200	33	154	10	-	250
चना व मसूर सिंचित (20:60:20)	-	300	33	230	-	-	375
सरसों (60:30:20)	65	150	33	115	105	65	188

(पृष्ठ 13 का शेष) लहसुन की खेती...

सिंचाई:

सिंचाई का मुख्य समय गांठों के बनने के समय होता है। इस समय सिंचाई में देर करने और असावधानी बरतने से गांठें फटने लगती हैं जिससे उपज कम हो जाती है। लहसुन में 12-14 सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। भूमि में नमी की कमी हो तो कलियों की बुवाई के बाद एक हल्की सिंचाई करते हैं। इसके बाद वानस्पतिक वृद्धि व कंद बनते समय 7-8 दिन के अंतराल पर हल्की सिंचाई व फसल पकने की अवस्था पर 12 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। अंतिम सिंचाई खुदाई के लगभग एक सप्ताह पहले करनी चाहिए।

प्रमुख रोग एवं रोकथाम

बैंगनी धब्बा (पर्पल ब्लाच): यह रोग अल्टरनेरिया पोरी नामक फफूंद से होता है। प्रभावित पत्तियों और तनों पर छोटे-छोटे गुलाबी रंग के धब्बे पड़ जाते हैं जो बाद में भूरे होकर आंख के आकार के हो जाते हैं तथा इनका रंग बैंगनी हो जाता है।

झुलसा रोग (स्टैम्फीलियम ब्लाइट): इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां एक तरफ पीली तथा दूसरी तरफ हरी रहती हैं।

मृदुरोगमिल फफूंदी (डाउनी मिल्ड्यू): इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियों की सतह पर बैंगनी रोयेदार वृद्धि दिखाई देती है जो बाद में हरा रंग लिए पीला हो जाती है अन्त में पत्तियां सूखकर गिर जाती हैं।

रोकथाम : बैंगनी धब्बा, झुलसा रोग एवं झुलसा रोग की रोकथाम के लिए मैकोजेब की 2.5 ग्राम या कार्बन्डाजिम 50 प्रतिशत 1 ग्राम प्रति लीटर पानी या कॉपर अक्सिक्लोराइड 1

लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें तथा आवश्यकता पड़ने पर 10-15 दिन के अन्तराल पर पुनः छिड़काव करें।

प्रमुख कीट एवं रोकथाम:

थ्रिप्स: ये कीड़े छोटे और पीले रंग के होते हैं जो पत्तियों का रस चूसते हैं। पत्तियों पर हल्के हरे रंग के लम्बे-लम्बे धब्बे दिखाई देते हैं जो बाद में सफेद हो जाते हैं। इस कीट की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एसएल की 1 मिली मात्रा, 2 लीटर पानी में मिलाकर 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

खुदाई एवं उपज:

फसल की ऊपर की पत्तियां जब पीली या भूरी पड़ने लगे तथा मुख्य तना मुड़ जाने पर लहसुन पका माना जाता है। इस प्रकार लहसुन के कंद को पकने में 4-5 माह का समय लगता है। खुदाई के पश्चात कंद को साफ करके ऊपर की पत्तियों से बांधते हैं तथा 3-4 दिन के लिए किसी छायादार स्थान पर रखते हैं। जिससे खेत की गर्मी कंद से निकल सकें। लहसुन की औसत उपज 100-125 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

भण्डारण: लहसुन को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देकर भण्डारण में होने वाले नुकसान को काफी कम किया जा सकता है।

► भण्डारण के समय गांठों को सुखा लें। ► पके हुए ठोस एवं स्वस्थ कन्दों का ही भण्डारण करें। ► भण्डारण गृह नमी रहित एवं हवादार हों। ► भण्डारण गृह में गांठों का ढेर न लगायें, बेहतर होगा कि गांठों की सूखी पत्तियों के छोटे-छोटे गच्छे में बांधकर लटका दें।

ट्रॉपिकल एग्रोसिस्टम

गेहूँ, चना, मटर, सब्जी व कंद वर्गीय आदि फसलों में उच्च बढ़वार व पैदावार हेतु जमीनी और छिड़काव के सम्पूर्ण पोषक तत्वों का समाधान

ट्रॉपिकल एग्रो सिस्टम (इं) प्रा.लि., म.प्र. (छ.ग.)
 105 कॉर्पोरेट हाउस, 169 आर.एम.टी. मार्ग इंदौर (म.प्र.)
 फोन : 0731-4045702 E-mail:indore@tropicalagro.com

(पृष्ठ 7 का शेष) चना उत्पादन की ...

▶ जड़ गलन व उकटा रोग की रोकथाम के लिये कार्बोण्डेजिम दो ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज को उपचारित करें। यह उपचार तीन चार सप्ताह तक प्रभावी रहता है। ▶ जिन क्षेत्रों में दीमक का प्रकोप हो वहां 100 किलो बीज में 400 मिलीलीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी मिलाकर बीज को उपचारित करें। ▶ कटवर्म प्रभावित क्षेत्रों में बीज को 10 मिलीलीटर क्यूनालफॉस 25 ईसी प्रति किलो बीज की दर से मिलाकर उपचारित करने के बाद बोयें।

रोग नियंत्रण हेतु: उकटा एवं जड़ सड़न रोग से फसल के बचाव हेतु 2 ग्राम थायरम+1 ग्राम कार्बेन्डाजिम के मिश्रण से प्रति किलो बीज या वीटावैक्स (कार्बोक्सिन) 2 ग्राम प्रति किलो से उपचारित करें। कीट नियंत्रण हेतु थायोमैथोक्सम 70 डब्ल्यू.पी. 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

बुवाई का समय: फसल से अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए खेत में प्रति इकाई पौधों की उचित संख्या होना बहुत आवश्यक है। पौधों की उचित संख्या के लिए आवश्यक बीज दर व पंक्ति एवं पौधे से पौधे की उचित दूरी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बुवाई की परिस्थितियों जैसे सिंचित व असिंचित एवं बीज के आकार को ध्यान में रखते हुये 55 से 75 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर काम में लें। कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. रखें। सिंचित क्षेत्र में 5-7 से.मी. गहरी व बारानी क्षेत्र में नमी को देखते हुए अधिक गहरी 7-10 से.मी. तक बुवाई कर सकते हैं। असिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक एवं सिंचित क्षेत्रों में 20 अक्टूबर तक बुवाई कर दें।

नोट: देर से पकने वाली प्रजातियों की बुवाई समय से अवश्य कर देना चाहिए अन्यथा उपज में कमी हो जाती है।

सिंचाई: चने की खेती अधिकतर बारानी क्षेत्रों में की जाती है परंतु सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो वहाँ मिट्टी व वर्षा को ध्यान में रखते हुए पहली सिंचाई बुवाई के 40-50 दिन बाद एवं दूसरी सिंचाई फली आने पर करें। यदि एक ही सिंचाई उपलब्ध हो तो 60 दिन पर दी जानी चाहिए। चने में हल्की सिंचाई करनी चाहिए। सिंचाई करते समय यह ध्यान दें कि खेत के किसी भाग में जल भराव की स्थिति न हो अन्यथा फसल को नुकसान हो सकता है।

शीर्ष शाखाएँ तोड़ना (खुटाई): खेत में चना के पौधे जब लगभग 20-25 से.मी. के हो तब शाखाओं के ऊपरी भाग को अवश्य तोड़ दें। ऐसा करने से पौधों में शाखायें अधिक निकलती हैं और चने में उपज अधिक प्राप्त होती है। चना की खुटाई बुवाई के 30-40 दिनों के भीतर पूर्ण करें तथा 40 दिन बाद नहीं करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण: खरपतवार चना की फसल को 50-60 प्रतिशत तक नुकसान पहुंचाते हैं। अतः खरपतवार नियंत्रण फसल उत्पादन तकनीक का अभिन्न अंग है। चना की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए पेन्डीमैथालिन 30 ई.सी. का 4-5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400-500 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 48 घंटे के अन्दर छिड़काव करना चाहिए। इसके बाद भी यदि खरपतवार पुनः दिखाई दे तो 30-35 दिन बाद एक निकाई करें। जिन क्षेत्रों में घास प्रजाति के खरपतवार अधिक हों वहाँ क्यूजालोफोप-इथाईल 5.0 ई.सी. का 4 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के 20-25 दिन बाद छिड़काव करें।

उर्वरकों का प्रयोग : सामान्य स्थिति में चना की फसल के लिए 20 किग्रा नत्रजन, 40 किग्रा फास्फोरस, 20 किग्रा पोटैश एवं 20 किग्रा गंधक प्रति हेक्टेयर संस्तुत की गई है। जिन क्षेत्रों की मृदा में बोरान या मोलिब्डेनम की कमी हो वहाँ 10 किग्रा बोरेक्स पाउडर या 1.0 किग्रा अमोनियम मोलिब्डेट प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करना चाहिए। असिंचित क्षेत्रों में मृदा में नमी की कमी की अवस्था में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव फली बनने की अवस्था में करने पर उपज में वृद्धि होती है।

खरपतवार नियंत्रण: चने की फसल के प्रारंभिक विकास में खरपतवारों द्वारा काफी प्रतिस्पर्धा होती है। यह प्रतिस्पर्धा पोषक तत्वों, नमी,

प्रकाश और स्थान के लिए होती है। खरपतवार आवश्यक पोषक तत्वों जैसे की नत्रजन, स्फुर और पोटैश को अवशोषित कर इनकी उपलब्धता को कम करता है। खरपतवारों के द्वारा फसल उत्पादन में 30-80 प्रतिशत तक नुकसान हो जाता है। सीधी या खड़ी प्रजातियां, खरपतवारों द्वारा ज्यादा प्रभावित होती हैं और इनमें चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार ज्यादा विकसित होते हैं क्योंकि इनको ज्यादा जगह और प्रकाश मिलता है, जो की इनके विकास के लिए आवश्यक होता है। फैलने वाले चने की प्रजातियों में ज्यादातर घास खरपतवार का प्रकोप होता है। ऐसी प्रजातियों की बढ़वार तेजी से होती है जिससे विस्तृत पत्ती वाले खरपतवार का विकास अवरोधित हो जाता है। चने की फसल के विकास के प्रारंभिक चरण में शुरू के 4-6 सप्ताह में खरपतवार नियंत्रण बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इस समय खरपतवार और चने के पौधों के बीच प्रतिस्पर्धा ज्यादा होती है। चने की फसल में अनेक प्रकार के खरपतवार जैसे बथुआ, जंगली गाजर, प्याजी, मोथा, दूब, अकरी, जंगली गोभी, कृष्णनील, जंगली सरसों, चिकोरी, जंगली शलजम, मकोई, चौलाई, जंगली मूली, रसभरी इत्यादि उगते हैं। ये खरपतवार फसल के पौधों के साथ पोषक तत्वों, नमी, स्थान एवं प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करके उपज को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त खरपतवारों के द्वारा फसल में अनेक प्रकार की बीमारियों एवं कीटों का भी प्रकोप होता है जो बीज की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। खरपतवारों द्वारा होने वाली हानि को रोकने के लिए समय से नियंत्रण करना बहुत आवश्यक है। चने की फसल में दो बार गुड़ाई करना पर्याप्त होता है। प्रथम गुड़ाई फसल बुवाई के 30-35 दिन पश्चात् व दूसरी 50-55 दिनों बाद करनी चाहिये। यदि मजदूरों की उपलब्धता न हो तो फसल बुवाई के तुरन्त पश्चात् पेन्डीमैथालीन की 2.50 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर खेत में समान रूप से मशीन द्वारा छिड़काव करना चाहिये। फिर बुवाई के 30-35 दिनों बाद एक गुड़ाई कर देनी चाहिये। इस प्रकार चने की फसल में खरपतवारों द्वारा हानि की रोकथाम की जा सकती है।

पाले से बचाव: दिसंबर से फरवरी तक पाला पड़ने की संभावना रहती है। फसल को बचाने के लिए यदि आवश्यकता हो तो 0.1 प्रतिशत गंधक के तेजाब का छिड़काव करें। (यानी 1000 लीटर पानी में एक लीटर गंधक का तेजाब मिलाकर एक हेक्टेयर में स्प्रेयर द्वारा पौधों पर अच्छी तरह से छिड़काव करना चाहिये) संभावित पाला पड़ने की अवधि में इसे 10 दिन के अंतर पर दोहराते रहना चाहिये। शीतलहर और पाले से चने की सुरक्षा के लिए हल्की सिंचाई करना काफी ज्यादा लाभप्रद रहता है। पाला पड़ने से चने की फसल में फली बेधक कीट लगता है जिससे बचाव के लिए हल्की सिंचाई करें और सल्फर का छिड़काव करें। इसके अलावा इल्ली का प्रकोप होता है। इसके लिए क्लोरपायरीफॉस का 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

फसल की कटाई एवं गहाई: फसल जब अच्छी प्रकार पक जाये तो कटाई करनी चाहिये। जब पत्तियां व फलियां पीली व भूरे रंग की हो जाये तथा पत्तियां गिरने लगे एवं दाने सख्त हो जाये तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिये। कटाई की गई फसल जब अच्छी प्रकार सूख जाये तो थ्रेशर द्वारा दाने को भूसे से अलग कर लेना चाहिये तथा अच्छी प्रकार सुखाकर सुरक्षित स्थान पर भण्डारित कर लेना चाहिये।

भण्डारण: भण्डारण के समय दानों में नमी का प्रतिशत 10 से अधिक नहीं होना चाहिए। भण्डार गृह में 2 गोली वाई एल्युमिनियम फास्फाइड प्रति टन रखने से भण्डार पर्याप्त कीटों से सुरक्षा मिलती है।

इफको ने नैनो उर्वरकों और जैव उर्वरकों के लाभ दिखाकर किसानों में नई उम्मीद जगाई

इफको किसान दिवस कार्यक्रम आयोजित



बालोद। ग्राम परसोदा, जिला बालोद में इफको द्वारा किसान दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि दिनेश गांधी (उप प्रबंधक कृषि सेवाएं) इफको रायपुर रहें। कार्यक्रम का संचालन इफको के क्षेत्रीय अधिकारी शुभम काले द्वारा किया गया। कार्यक्रम में श्री गांधी द्वारा किसानों को इफको के कम कीमत पर अधिक लाभ देने वाले उत्पाद नैनो उर्वरक पर प्रकाश डाला। दानेदार उर्वरकों के संभावित दुष्प्रभावों के बारे में किसानों को जागरूक किया और उनके स्थायी समाधान के रूप में इफको नैनो डीएपी और नैनो यूरिया के उपयोग का सुझाव दिया गया। सभी किसानों को ग्राम परसोदा के कृषक कन्हैया लाल साहू के खेत पर लगे प्रदर्शन प्रक्षेत्र में इफको नैनो उर्वरकों के लाभ का सीधा परिणाम जमीनी प्रदर्शन दिखाया गया। कार्यक्रम में कृषकों ने स्वयं खेत पर जाकर नैनो उर्वरकों के फायदों को अनुभव किया और परिणाम देखकर समूह ने नैनो उर्वरकों के उपयोग का दृढ़ निर्णय लिया। चयनित किसानों को इफको की ओर से एन.पी.के. तरल कंसोर्टिया प्रदान की गई। कार्यक्रम ने किसानों में उर्वरक चयन के प्रति जागरूकता बढ़ाई और नैनो उर्वरकों के प्रति सकारात्मक रुझान बनाया। आगे भी इफको द्वारा ऐसे ही किसान केंद्रित शिक्षा प्रदान करने की बात कही गई।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-



एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875,
9300754675, 9826686078



मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स

(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

- औषधीय ● वन ● सब्जी ● फूल ● बीज ● स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ● कीटनाशक ● जैविक खाद
- गार्डन टूल ● जैविक उत्पाद ● ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
- वितरक -** ● निर्मल सीड्स, जलगांव ● कलश सीड्स, जालाना ● अंकुर सीड्स, नागपुर
- वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ● दिनाकर सीड्स, गुजरात ● सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन
- गार्डन टूल्स, लुधियाना ● स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ● जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ● स्काई
- बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ● अनु प्रोडक्ट्स लि. ● श्री सिद्धि एग्री केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय जबलपुर के कृषि वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने ली राष्ट्रीय एकता की शपथ



जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर स्थित परियोजना समन्वयक इकाई (तिल एवं रामतिल), जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय परिसर, जबलपुर में राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर डॉ. ए.के. विश्वकर्मा, परियोजना समन्वयक (तिल एवं रामतिल), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा शपथ समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में डॉ. के.एन. गुप्ता वरिष्ठ वैज्ञानिक सहित संस्था के कृषि वैज्ञानिकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रीय एकता की शपथ ली गई।

उद्यानिकी क्लस्टर विकास कार्यक्रम में प्रविष्टियां आमंत्रित

उज्जैन। भारत सरकार कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड द्वारा हार्टिकल्चर क्लस्टर विकास कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य बागवानी उत्पादों के उत्पादन एवं गुणवत्तापूर्ण मूल्य संवर्धन मार्केटिंग एवं ब्रांडिंग को प्रोत्साहित किया जाना है जिससे कृषकों की आय में वृद्धि करना मुख्य उद्देश्य है।

योजना में मुख्य उद्यानिकी फसलें जैसे टमाटर, प्याज एवं आलू के साथ जिले में जलवायु के अनुसार अच्छी एवं

गुणवत्तायुक्त उत्पादन देने वाली फसलों को शामिल किया गया है।

योजना में आवेदन करने हेतु पात्र क्रियान्वयन एजेन्सी जैसे कृषक उत्पादक संघ आदि एजेन्सियों से संपर्क कर न्यूनतम वार्षिक फार्म गेट वैल्यू 100 करोड़ तक होना अनिवार्य किया गया। आवेदक को आईएस के घटक की लागत का न्यूनतम 20 प्रतिशत शेयर स्वयं वहन करने का प्रावधान किया गया है। योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी उप संचालक उद्यान उज्जैन के कार्यालय से ली जा सकती है।

मनोज सक्सेना प्रचार प्रमुख बने

भोपाल। भारतीय किसान संघ भोपाल संभाग की बैठक संभागीय अध्यक्ष बिसन सिंह बघेल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई बैठक में पूरी संभाग की कार्यकारिणी उपस्थित रही। प्रान्त संगठन भरत पटेल द्वारा कार्यकर्ताओं से चर्चा कर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया। बैठक में विभिन्न आयामों के लिए संभाग के प्रभारी नियुक्त किए गए। इस बैठक में दो नवीन दायित्वों की घोषणा भी की गई। मनोज सक्सेना भोपाल से संभागीय प्रचार प्रमुख एवं अरविंद पटेल भोपाल से नगर प्रचार प्रमुख का दायित्व का निर्वहन करेंगे। संभागीय अध्यक्ष द्वारा नवीन दायित्व की घोषणा एवं तिलक लगा कर स्वागत किया गया। बैठक में प्रान्त प्रचार प्रमुख राहुल धूत भी उपस्थित रहे। संभाग से वेदप्रकाश दांगी, गोविंद ठाकुर, भगवान सिंह, भीमसिंह सिंह ठाकुर, दीपक शर्मा, केशर सिंह, राघवेंद्र रावत, जीवन सिंह परमार (कक्कू जी) उपस्थित रहे।



वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक आयोजित

धार। कृषि विज्ञान केन्द्र, धार की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक हाइब्रिड मॉड में डॉ. वॉय.पी. सिंह, निदेशालय विस्तार सेवाएं, रा.वि.सिं.कृ.वि.वि., ग्वालियर की अध्यक्षता में, डॉ. रजनीश श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक, अटारी, जबलपुर, डॉ. भरत सिंह, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, इन्दौर एवं डॉ. अखिलेश सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, निदेशालय विस्तार सेवाएं, रा.वि.सिं.कृ.वि.वि., ग्वालियर आदि के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुई। बैठक में डॉ. एस.एस. चौहान, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख द्वारा विगत खरीफ 2025 में किये गए कार्यों एवं आगामी रबी 2025-26 की कार्य योजना का प्रस्तुतीकरण किया गया।

डॉ. वॉय.पी. सिंह ने कहा कि केन्द्र अन्य कृषि विज्ञान केन्द्रों से संपर्क कर किसानों के लाभार्थ हेतु अधिक प्रयास करें। कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) से वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रजनीश



श्रीवास्तव ने कहा कि नैनो यूरिया एवं नैनो डी.ए.पी. से होने वाले फायदे एवं नुकसान के बारे में प्रयोग किये जाये। किसान कल्याण एवं कृषि विकास, धार के उप संचालक जी.एस. मोहनिया ने कहा कि मौसम के अनुरूप उचित समय पर किसानों की जागरूकता हेतु केन्द्र 1-2 मिनट के छोटे वीडियो क्लिप बनाकर विभिन्न सूचना तकनीकी से साझा किये जाये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंकिता पाण्डेय एवं आभार प्रदर्शन डॉ. डी.एस. मण्डलोई द्वारा किया गया। कार्यक्रम में रीतेश जैन, गौरव सारस्वत, भूपेन्द्र कुमार कुर्मी, जितेन्द्र नायक आदि ने अपना सहयोग प्रदान किया।

बीज वितरण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

रतलाम। कृषि विज्ञान केन्द्र जावरा रतलाम के द्वारा संचालित निकरा परियोजना के तहत डॉ. सर्वेश त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख के मार्गदर्शन में बीज वितरण एवं संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. त्रिपाठी ने किसानों को केवीके में संचालित गतिविधियों एवं स्थापित प्रदर्शन इकाईयों के बारे में बताया।

इस दौरान रबी मौसम में ली जाने वाली फसलें क्रमशः गेहूँ (प्रजाति- एच.आई.- 1650), चना (प्रजाति- आर.वी.जी.-204) एवं मसूर (प्रजाति- एल.4727) का बीज वितरित किया गया।



साथ ही एस.सी.-एस.पी. निदान के बारे में कृषकों को प्लान अंतर्गत कृषक/महिला जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में उपस्थित आदित्य प्रताप कृषको को कड़कनाथ मुर्गा/ मुर्गी का वितरण भी किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप तिवारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौध संरक्षण) ने वितरित किए गए बीज की विशेषताओं के साथ ही उनमें लगने वाली बीमारियों के लिए कृषको को प्रेरित किया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में ग्राम नवाबागंज, सबलगढ़ एवं कोटड़ा के कृषक / महिला कृषकों सहित के 80 कृषकों ने भाग लिया।

(पृष्ठ 8 का शेष)

लाभकारी है चना मसूर

इसके अलावा दलहनी फसलों में अनाज फसलों एवं तिलहन की तुलना में उर्वरक का उपयोग कम करने से लागत में कमी होती है एवं बचत में वृद्धि होती है।

दलहनी फसलें और जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण

नाइट्रोजन फसल उत्पादन के लिए एक प्राथमिक आवश्यक पोषक तत्व है और सौर विकिरण एवं जल के बाद फसलों के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। दलहनी फसलों में फलीदार पौधों और राइजोबिया के सहजीवी संबंध के माध्यम से वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करने की क्षमता होती है। यह जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण न केवल फलीदार पौधों को उनकी नाइट्रोजन की आवश्यकता को पूरा करने में मदद करता है, बल्कि मृदा नाइट्रोजन की स्थिति को भी समृद्ध करता है जिससे आगामी फसल की उपज में सुधार होता है। पौधे मिट्टी से नाइट्रोजन या तो फलीदार पौधों के अवशेषों के अपघटन के माध्यम से प्राप्त करते हैं या फलीदार पौधों के माध्यम से वायुमंडलीय नाइट्रोजन स्थिरीकरण से प्राप्त करते हैं। वे फलीदार पौधे जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करके मृदा में मिलाते हैं, उन्हें नाइट्रोजन-दाता पौधे कहा जाता है और वे जो मृदा नाइट्रोजन प्राप्त करते हैं उन्हें नाइट्रोजन-प्राप्त करने वाले पौधे

कहा जाता है। नाइट्रोजन-दाता से नाइट्रोजन-ग्राही तक नाइट्रोजन स्थानांतरण की यह घटना नाइट्रोजन प्राप्त करने वाले पौधों की नाइट्रोजन माँग के 10-85 प्रतिशत तक भिन्न होती है और फसल प्रणाली में उपयुक्त दलहनी फसलों को अपनाकर, फसलों की नाइट्रोजन माँग को जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। इस जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण की सीमा शून्य से लेकर कई सौ किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर तक भिन्न होती है।

दलहनी फसलों और मृदा स्वास्थ्य सुधार के बीच तालमेल

आधुनिक, गहन कृषि प्रणाली मुख्यतः कृषि-रसायनों पर निर्भर है, जिससे मृदा स्वास्थ्य का ह्रास होता है। गहन खेती और दोषपूर्ण मृदा प्रबंधन प्रथाओं के कारण, मृदा संघनन और अपरदन में वृद्धि, मृदा उत्पादकता में कमी और मृदा सूक्ष्मजीवी गतिविधि में कमी जैसी गंभीर बाधाएँ सर्वविदित हैं। दलहनी फसलें प्रतिदिन लगभग 2.6 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर जमा कर सकती हैं और उनका समावेशन रासायनिक नाइट्रोजन उर्वरकों के 50-100 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर के बराबर हो सकता है। जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण चावल के खेत में अवशिष्ट नाइट्रोजन की मात्रा को 9.7-20.5 प्रतिशत तक बढ़ा देता है। दलहनी पौधों के अवशेषों को मिलाने से मिट्टी में लगभग 50-60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन मिलता है जिसका उपयोग अगली फसल द्वारा किया जा सकता है और

इस स्थिति में नाइट्रोजन की हानि रासायनिक उर्वरक के प्रयोग की तुलना में काफी कम होती है। निरंतर अनाज आधारित फसल प्रणाली अपनाते से मृदा स्वास्थ्य में गिरावट आती रहती है। इस समस्या के समाधान के लिए, फसल प्रणाली में उपयुक्त दलहनी फसल को शामिल करना मिट्टी की उर्वरता के साथ-साथ उत्पादकता को बनाए रखने का एक स्थायी विकल्प हो सकता है। जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से दलहनी फसलें प्रति वर्ष 150-200 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर बचा सकती हैं और उचित राइजोबियम टीकाकरण पर अपनी नाइट्रोजन की 90 प्रतिशत आवश्यकता पूरी कर सकती हैं। इन दलहनी अवशेषों के अपघटन के दौरान, कुछ नाइट्रोजन मिट्टी में पुनर्चक्रित हो जाता है और यह नाइट्रोजन चक्रण अवशेषों की गुणवत्ता, मृदा सूक्ष्मजीवी गतिविधि और मृदा पर्यावरण, पीएच, वातन आदि द्वारा नियंत्रित होता है।

दलहनी फसलों के अवशेष मृदा के भौतिक, रासायनिक और जैविक स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं। अलग-अलग जड़ों की गहराई और न्यूनतम मृदा विक्षोभ वाली फसलों को लेते हुए, फलीदार पौधे मृदा में सूक्ष्म और वृहद छिद्रों को अनुकूलित करते हैं जिससे जड़ क्षेत्र की गहराई तक पानी का रिसाव बढ़ जाता है। जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण के साथ, दलहनी फसलें मृदा में उच्च गुणवत्ता वाले कार्बनिक पदार्थ और पोषक चक्रण को बढ़ा सकती हैं।

अन्नदाता का साथ किसान का विकास



अन्नदाता

जिंकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)

सल्फर और जिंक की ताकत
ज्यादा उपज और कम लागत



अन्नदाता जिबो

अन्नदाता जिबो का वादा
मिट्टी जानदार और उपज भी ज्यादा



ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज

रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-0-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)

उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा)। कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (रजौवा एवं बण्डा - सागर)

कृषि ज्ञान का खजाना, कृषक दूत डायरी जरूर लाना

नव वर्ष पर शुभचिंतकों, मित्रों एवं प्रिय ग्राहकों को भेंट का सर्वोत्तम उपहार

कृषक दूत
की सदस्यता लेकर
डायरी
मुफ्त पायें

कृषक दूत
डायरी 2026



कीमत
225/-
रु. मात्र

डाक खर्च अतिरिक्त

अब नये आकर्षक आकार में

कृषक दूत डायरी 2026 के प्रमुख आकर्षण

- केन्द्र एवं राज्य पोषित विभिन्न कृषि एवं अन्य योजनाओं की जानकारी।
- प्रमुख फसलों की कृषि कार्यमाला एवं उन्नत किस्मों की विस्तृत जानकारी।
- तहसील, विकासखण्ड, कृषि उपज मंडियों की सूची।
- फसल उत्पादन संबंधी सांख्यिकीय की जानकारी
- प्रत्येक पृष्ठ पर कैलेंडर तिथि, व्रत एवं त्यौहारों की जानकारी।
- मध्यप्रदेश में कार्यरत कृषि आदान प्रदायक कंपनियों की सूची।

संपर्क करें

कृषक दूत

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, भोपाल (म.प्र.)

फोन : (0755) 4233824 मो. : 9300754675, 9827352535, 9425013875

Email:- krishak_doot@yahoo.co.in | Website : www.krishakdoot.org

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26
कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.)
Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख मासिक

पृष्ठ क्रमांक-20 (भोपाल 04 से 10 नवम्बर 2025)

**उम्मीद से
ज्यादा का वादा**

**50
HP**

Chetak DI 65 (4WD)

4

लिट्रिफ्ट का
4088 CC
दमदार इंजन

**ACE
TRACTORS**

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- हेवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre



**दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस**



हर कदम हर डगर

ACE TRACTORS

हर किसान का हमसफर

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रेक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्रयल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

**100%
Swadeshi**

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध



कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राइवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India

Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com